स्वर्णिम गुजरात
संस्कृत अभियान

स्वर्णिम-गुजरात
१९६०-२०१०

गुजरात संस्कृत अकादमी,
संस्कृति विभाग, गांधीनगर

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी
वेरावल - गुजरात

संस्कृत भारती
गुजरात

स्वर्णिम गुजरात उत्सव
प्रांत का संकल्प
संस्कृत वातावरण निर्माण

Scanned with CamScanner

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ

दिनांक : ३, ४, ५ दिसम्बर, २०१०

Scanned with CamScanner

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी परिचय

गुजरात राज्य सरकारश्री द्वारा युनिवर्सिटी की स्थापना १२ अप्रेल,२००५ के दिन सोमनाथ -वेरावल में की गई। युनिवर्सिटी भवन एवं जमीन श्री सोमनाथ ट्रस्ट ने प्रदान की है। श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी का ध्येय वाक्य 'पूर्णता गोरवाय' है। संस्कृत, संस्कार और संस्कृति का ज्यादा से ज्यादा प्रचार-प्रसार करना, आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का समन्वय करना व्यवसायलक्षी पाठयकमो का व्याप बढना और नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तकनिकी का ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना युनिवर्सिटी का मुख्य लक्ष्य है।

दिनांक १७ फरवरी-२००६ के दिन युनिवर्सिटी को यु.जी.सी. द्वारा मान्य युनिवर्सिटीयों की सूचि में शामिल किया गया एवं कलम 2(F) तहत मान्यता प्रदान की गई। जुन - २००६ से शास्त्री- आचार्य कक्षा के पाठ्यकम युनिवर्सिटी द्वारा तैयार किये गये और युनिवर्सिटी की २७ मान्यता प्राप्त संस्कृत महाविद्यालयों में पाठ्यकम शुरू किये गये। पाठ्यकम में कम्प्युटर और अंग्रेजी अनिवार्य विषय के रूप मे रखे गये हैं।

युनिवर्सिटी परिसर में जुलाई - २००६ से अनुस्नातक अभ्यासकम शुरू किये गये। जुन - २००७ से युनिवर्सिटी मुख्यालय पर संस्कृत कोलेज शुरू की गई एवं अहमदाबाद में स्वनिर्भर संस्कृत बी. अेड्. कोलेज को संलग्नता दी गई। युनिवर्सिटी द्वारा विविध डिप्लोमा पाठ्यकम शुरू किये गये जिसके लिए ५३ केन्दो को मान्यता प्रदान की गई। 'आर्ष अक्षरधाम-गांधीनगर एवं श्री तत्वज्ञान मंदिर-मोडासा को संशोधन संस्था के रूप मे मान्यता दी गई। वर्ष-२००७ से युनिवर्सिटी में पी एच. डी. एवं एम. फिल. जैसे संशोधनात्मक अभ्यासकम शुरु किये गये और अब तक पी. एच.डी. अन्तर्गत ८० छात्रों को संशोधन के लिए नामांकित किया गया है। वर्ष २०१०-११ के शैक्षिक वर्ष से कम्प्युटर विभाग अन्तर्गत पी.जी.डी.सी.ए. अभ्यासकम प्रारंभ किया गया।

शैक्षिक वर्ष २०१० से शास्त्री आचार्य प्रथम वर्ष एवं बी. एड्. अभ्यासकम में 'चोइस बेस्ड केडिट सिस्टम' एवं 'सेमेस्टर सिस्टम' लागु किया गया।

युनिवर्सिटी संलग्न महाविद्यालयों एवं अनुस्नातक विभागों में साहित्य, व्याकरण, ज्योतिष, वेद, वेदांत, न्याय, धर्मशास्त्र, वास्तुशास्त्र, पौरोहित्यम, कर्मकांड तथा पुराणेतिहास मुख्य विषय के तौर पर तथा अंग्रेजी, कम्प्युटर, हिन्दी, गुजराती, अर्थशास्त्र, इतिहास जैसे गौण विषयोंका अभ्यास मान्य किया गया है। युनिवर्सिटी द्वारा मंदिर व्यवस्थापन, योग, ज्योतिष, वास्तुशास्त्र तथा कर्मकांड जैसे एक वर्ष के डिप्लोमा तथा अर्धवार्षिक प्रमाणपत्रीय अभ्यासकम शुरु किये गये है। व्यावसायिक छात्रों के लिये बाह्य परीक्षा का प्रावधान भी किया गया है।

युनिवर्सिटी मुख्यालय पर आनुषांगिक सुविधाएँ जैसे - पुस्तकालय, परिसंवाद कक्ष, परिषद कक्ष, ध्यान कक्ष, वेद मंदिर, यज्ञशाला, कम्प्युटर लेब, सरस्वती मंदिर, छात्रावास, बास्केट बोल, वोलीबोल मैदान एवं २०० मीटर का ट्रेक तैयार किया गया है।

युनिवर्सिटी द्वारा प्रति वर्ष छात्र एवं अध्यापकों की ज्ञानवृद्धि हेतु विविध संगोष्ठी, चर्चासभा, कार्यशिबिर, तालीम कार्यकम एवं राज्यस्तरीय तथा राष्ट्रस्तरीय परिसंवादो का आयोजन किया जाता है।साथ ही युवक महोत्सव तथा कीडा महोत्सव का भी आयोजन किया जाता है।

विशिष्ट पदविदान समारोह में महामहिम राज्यपालजी द्वारा संस्कृत के विद्वानों को डी.लिट. तथा पी. एच. डी. की पदवी प्रदान की गई है। युनिवर्सिटी द्वारा 'सोमज्योति'' सामयिक प्रकाशित किया जाता है।

गुजरात राज्य स्थापना सुवर्ण जयंति के उपलक्ष में स्वर्णिम गुजरात संस्कृत संभाषण योजना के अन्तर्गत एक लाख विद्यार्थीयों को संस्कृत- संभाषण में तैयार किया गया।

अन्तर्राज्यीय संस्कृत की विविध स्पर्धाओं में संस्कृत विश्वविद्यालय एवं इस से सम्बद्ध महाविद्यालयों के छात्रों एवं छात्राओं द्वारा हिस्सा लिया जाता है और उत्कृष्ट प्रदर्शन कर के स्वर्ण, रजत एवं कांस्य पदक लाने में सफलता प्राप्त करते है।

Scanned with CamScanner

दिनांक : २६-०४-२०११

-: संदेश :-

संस्कार, संस्कृति और संस्कृत को स्वर्णिम गरिमा प्रदान करने का लक्ष्य स्वर्णिम गुजरात संस्कृतोत्सव में रखा गया था। उसी उपलक्ष्य के आगे कदम श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल द्वारा राष्ट्रिय संस्कृत महाकुंभ का आयोजन हुआ। गुजरात की पुण्यधरा वेरावल नगरी में ३, ४, ५ दिसम्बर, २०१० को आयोजित इस महाकुंभ में 'उपनिषद से उपग्रह' की और आगे बढने का दृढ विश्वास दिलाया। दृढता से आगे बढना स्वयं में एक सफलता है। मात्र १ साल की अवधि में संस्कृत संभाषण योजना के तहत एक लाख लोगों को संस्कृत में भाषणशिल बनाये गये।

इस संस्कृत अभियान और महाकुंभ प्रसंग के क्षणचित्र और विवरण का अतिस्पष्ट और सुंदर चित्रण दर्शानेवाली स्मरणिका का प्रकाशन किया गया है।

महोत्सव के अंतर्गत आयोजित विविध संस्कृत स्पर्धाएँ, अभिवादन समारोह, देशभर में से यहां उपस्थित विशाल संस्कृत अनुरागी जनसमुदाय, विद्वान और पंडितों, छात्र एवं महानुभावों, आदि की सविवरण तस्वीरों से यह प्रकाशन पुस्तिका निश्चित रुप से एक स्वर्णिम स्मरणिका बन पाई है।

स्वर्णिम गुजरात वर्ष के दौरान संस्कृत वातावरण निर्माण और सांस्कृतिक स्पंदन का अनुभव करानेवाली इस स्मरणिका एवं राष्ट्रिय संस्कृत महाकुंभ के सफल आयोजन के लिये सभी का श्रम साफल्य प्रसंशनीय रहा - धन्यवाद।

प्रति,
आयोजकश्री,
स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ,
वेरावल

आपका,
(नरेन्द्र मोदी)

नरेन्द्र मोदी
मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य

Scanned with CamScanner

RAMANLAL VORA

Government of Gujarat
Minister,
Education (Primary, Secondary, Adult),
Higher and Technical Education
Block No. 1, 8th Floor, Sardar Patel Bhavan,
Gandhinagar, Gujarat - 382 010.
Telephone : (079) 23223080, 23238073
(079) 23257762, 23257861
Fax : (079) 23257766
Dt. : 03-05-2011.

-:: शुभेच्छा संदेश ::-

श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के द्वारा युनिवर्सिटी के विविध सांस्कृतिक संकल्प यथासमय साकार हुए उसकी सुखद गौरवास्पद स्मृति प्रदान करने वाली स्मरणिका का प्रकाशन किया जा रहा है यह जान कर मुझे असीम आनन्द का अनुभव हो रहा है।

गौरवपूर्ण गुजरात राज्य के स्वर्णिम जयन्ती वर्ष के मंगल मनोरथ संकल्पो में अन्यतम अदभुत अभूतपूर्व संकल्प था कि गुजरात में एक लाख संस्कृत जिज्ञासु व्यक्तियों को संस्कृत का प्रशिक्षण दिया जाय और यह भगीरथ कार्य श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी के द्वारा वर्ष २००९ - १० में संस्कृत भारती गुजरात के सहयोग से सम्पन्न किया गया। इसी उपक्रम में ३ से ५ दिसम्बर - २०१० में स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ के आयोजन के स्वरुप में भव्य समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इस प्रसंग पर राष्ट्रिय परिसंवाद, पत्रकार संगोष्ठी, कविसम्मेलन, भास नाट्य महोत्सव, सांस्कृतिक - साहित्यिक प्रतियोगिता इत्यादि अनेकविध कार्यक्रमों का भारतीय अस्मिता द्योतक-पोषक आयोजन हुआ। मैं प्रसन्नता की अनुभूति कर रहा हूँ कि संस्कृत भाषा एवं साहित्य के अध्ययन, अध्यापन, प्रचार, प्रसार के माध्यम से जिज्ञासु अधिकारीयों को संस्कृत भाषा में निहित परा और अपरा विद्याओं का अवबोधन कराया जा रहा है।

मैं विश्वविद्यालय के कुलपतिजी एवं अधिकारी - कर्मचारी गणों को साधुवाद देता हूँ जिनके अथाक प्रयत्न से ऐसे विविध प्रकल्प साकार हो रहे है।

स्मरणिका के प्रकाशन पर मैं अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त करता हूँ एवं शुभेच्छा प्रदान करता हूँ।

प्रति,
डॉ. पंकजभाई जानी
कुलपतिश्री,
श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी,
वेरावल

रमणलाल वोरा

Scanned with CamScanner

Pro. Vasuben Trivedi

MOS. /Hi. Edu. & W. & C. Dev. / 1267/2011
Phone : 079-232 50188, 232 50195, 232 50189 (Fax)
Minister of State,
Higher & Technical Education,
Women & Child Development
Block No. 2/7, Sachivalaya Complex,
Gandhinagar (GUJ.) - 382 010
Date : - 2nd May, 2011

शुभकामनाएँ..

संस्कृत भारत की प्राचीन भाषा है और वह बहुधा भारतीय भाषाओं की जननी भी है। अर्वाचीन समय में क्रमश: उसका उपयोग लुप्त होता जा रहा है। भारतीय भाषा का संरक्षण एवं संवर्धन करने के लिए गुजरात सरकार ने दिनांक १२-४-२००५ को श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी की स्थापना की है। इस युनिवर्सिटीमें संस्कृत भाषा का शिक्षण एवं संशोधन कार्य करने के उपरांत आम जनता में संस्कृत को लोकप्रिय बनाने का उद्देश्य मुख्य रहा है। गुजरात में कई निजी ट्रस्ट द्वारा संस्कृत अध्ययन का कार्य हो रहा है। उसके उपरांत सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्कृत विद्यालय भी कार्यरत है।

गुजरात राज्य स्वर्णिम जयंति के अवसर पर माननीय मुख्यमंत्रीश्री नरेन्द्रभाई मोदीजी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में संस्कृत महाकुंभ का आयोजन किया गया था। भारत के पौराणिक समृद्ध संस्कृत साहित्य एवं हमारी बहुमूल्य विरासत एवं संस्कृति का परिचय संस्कृत महाकुंभ में कराया गया था। इसके उपरांत संस्कृत कवि संमेलन, पत्रकार संगोष्ठि एवं राष्ट्रिय परिसंवाद को देश विदेश से आये हुए संस्कृत भाषा के विद्वानो ने उपस्थित रह कर महाकुंभ को सुशोभित किया था।

संस्कृत भाषा के संरक्षण एवं प्रसार और प्रचार के लिए गुजरात सरकार के विनम्र प्रयासों का परिचय राष्ट्रिय फलक पर करने के लिए "स्वर्णिम गुजरात संस्कृत अभियान" पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। आशा है संस्कृत प्रेमीओं को यह पसंद आयेगी।

संस्कृत भाषा की विरासत को आनेवाली पीढीओं के लिए सुरक्षित करने के हेतु श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, गुजरात संस्कृत अकादमी एवं संस्कृत भारती द्वारा किए गये संकलित प्रयासो के लिए में अभिनंदन देती हूँ और इन प्रयासों की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रति,
डॉ. पंकजभाई जानी
कुलपतिश्री,
श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी,
वेरावल

(प्रो. वसुबेन त्रिवेदी)

Scanned with CamScanner

स्वर्णिम गुजरात का संस्कृत स्पन्दन

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ॥

ऋ. १/१९१/२

यह ऋग्वैदिक मंत्र हम मनुष्यों को साथ साथ चलने, साथ साथ बोलने अर्थात् परस्पर सकारात्मक संवाद करने तथा एक दूसरे के मनः स्थिति को समझने का सन्देश देता है। यह समाज की समरसता एवं समानता की ओर बढने के लिए हमें प्रेरित करता है। किसी भी लोकतन्त्रीय शासन के लिए इससे बढ़कर और कोई सन्देश विश्व साहित्य में शायद ही हो। इस वैदिक - संस्कृत एवं वैदिक - संस्कृति का प्रायोगिक पक्ष आज कला-संस्कृति एवं धार्मिक - लोकतन्त्र प्रधान गुजरात प्रान्त में प्रत्यक्ष दिखाई देता है।

वैज्ञानिकों की दृष्टि में जो 'जीन्स' कहे जाते है - वह संस्कृत शास्त्र में गुणसूत्र या संस्कार के रूप में प्रयुक्त है - जो आगे की आनुवंशिक प्रोन्नति के हेतु माने जाते है।

भगवान सोमनाथ एवं द्वारकाधीश के चरण-रज से पवित्र यह गुर्जर धरा उपर्युक्त गुणसूत्रों के आधार पर राष्ट्र-पिता महात्मा गान्धी एवं सरदार पटेल जैसे विभूतियों को अवतरित कर सकी, जिन्होंने अपने भारतीय सांस्कृतिक - विरासत के आधार रूप संस्कृत भाषा एवं साहित्य को मानव जीवन मूल्य की लोकतन्त्र में प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक तो माना ही - साथ - साथ इसे भारतीय अस्मिता का रूप भी माना।

यहाँ यह उल्लेख करना अत्यावश्यक है कि इस गुजरात की धरती का, भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीसोमनाथ एवं भगवान वेद के साथ ही इस गुजरात की पुण्यधरा पर उत्पन्न सन्तो एवं महात्माओं, का परस्पर गहरा सम्बन्ध है । भगवान वेद शब्द रूप है - उनका विग्रहरूप श्री कृष्ण तथा श्री सोमनाथ है; जिनके मानवविग्रह यहाँ के सन्तो में विद्यमान है। इनके उपदेश एवं कृपा प्रसाद तथा कथावाचन इत्यादि से सम्पूर्ण गुजरात की प्रजा सुसंस्कृत, संस्कारयुक्त एवं धार्मिक भावना से ओतप्रोत है।

इसी प्रजा का प्रतिनिधित्व राजतंत्र एवं प्रशासनतंत्र से जुडे सभी सदस्य करते है । अतः सहज भाव से यह गुजरात राज्य संस्कृत एवं संस्कृतनिष्ठ भारतीय संस्कृति को उन्नत करने के लिए सतत प्रयत्नशील है।

बहुत समय तक देश के कुछ विकृत बुद्धि एवं भौतिक - भोगवादी लोग इस संस्कृत पर अनेक आक्षेप लगाते रहे लेकिन उनमें जो दृढ प्रतिज्ञा वाले समाज थे - जो संस्कृत एवं धर्म के मर्म को समझते तथा राष्ट्रिय एकता एवं समृद्धि के लिए हमारे ऋषि - मुनियों के

डॉ. सत्यव्रत शास्त्री
ज्ञानपीठ पुरस्कार से सन्मानित, पद्मभूषण, राष्ट्रपति द्वारा सन्मानित, वरिष्ठ विद्वान, पूर्व कुलपति - श्रीजगन्नाथ विश्वविद्यालय - पुरी

Scanned with CamScanner

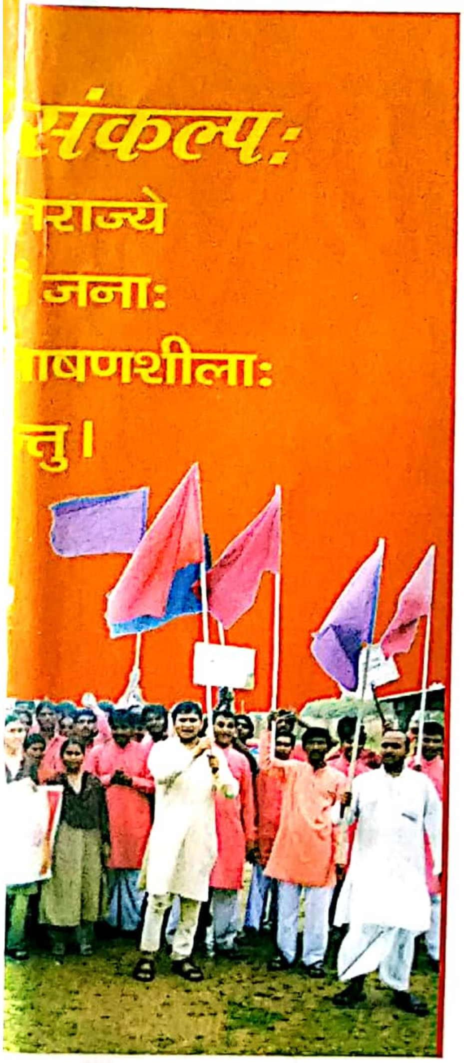

उपदेश-प्रधान संस्कृत भाषा एवं साहित्य को अत्यावश्यक मानते थे - उनमें मुख्य कोई समाज आगे आया तो वह गुजरात समाज था जहां आज भी परस्पर मिलने पर "जय सोमनाथ" "जय श्रीकृष्ण" से अभिवादन किया जाता है । ये दोनों ही भगवान वेद के दैवि विग्रह या पौराणिक विग्रह है - जो संस्कृतमय है। जब संस्कृत भाषा एवं साहित्य राजतंत्र एवं शासनतन्त्र में प्रिय हो जाए तो उसे लोकप्रिय एवं लोकभाषा बनने में देर नहीं होती।

एक मुख्य बात देखने में यह आ रही है - कि गुजरात का हर समाज संस्कृत को राष्ट्रियता की पहचान समझकर इसे अपना रहा है - तथा समाज का हर वर्ग इसे सीखना चाहता है । सब की रुचि संस्कृत के प्रति बढती दिखाई देती है । इसके तहत समग्र गुजरात राज्य में स्वर्णिम वर्ष पर्यन्त संस्कृत, संस्कार एवं संस्कृति संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन हुआ जिसमें विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय तथा समाज के हर वर्ग के लोगों ने हिस्सा लिया । गौरवशाली गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्रीजी आदरणीय श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में संस्कृत भाषा - साहित्य के प्रचार-प्रसार एवम् संवर्धन का जो कार्य हुआ है वह अविस्मरणीय है तथा गुजरात राज्य के लिए गौरवशाली अध्याय है।

गौरवशाली गुजरात राज्य की स्थापना के ५० वर्ष पूर्ण होने पर, इसके स्वर्णिम-स्वरूप के व्यापक एवं बहु-आयामी (Multi Dimentional) विकास को जब रेखाङ्कित करने का अवसर गुजरात को मिला तो यह एक स्पन्दित गुजरात (Vibrant Gujarat) के रूप में प्रतीत होता हुआ दिखाई दिया। इस वाइब्रेंट गुजरात की अवधारणा में समस्त गुजरात की जनता की क्रियाशीलता एवं इसके परिणाम स्वरूप सम्पूर्ण-गुजरात-राज्य का चतुर्दिक्-विकास निहित है। इन्हीं विकास की श्रृंखलाओं में भारतीय-सांस्कृतिक-जागृति को भी गुजरात राज्यने महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। इस सांस्कृतिक - जागृति के अवसर पर हमारे राष्ट्र के ऋषियों, मुनियो, मनीषियों, कवियों एवं आचार्यों के सन्देशों को वेद पुराण एवं धर्मशास्त्र के साथ काव्यों एव काव्यशास्त्रों के गर्भ से बाहर लाकर उनके प्रायोगिक रुपों को दर्शाने का काम भी गुजरात राज्य ने अपने हाथों मे लिया। इसी पुनित कार्य हेतु श्री सोमनाथ संस्कृत युर्निवर्सिटी की स्थापना की गयी थी जिसमें आज संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रचार प्रसार के साथ शास्त्रों का परम्परागत रूप से अध्ययनाध्यापन एवं शोधकार्य हो रहे हैं।

स्वर्णिम गुजरात के अवसर पर माननीय मुख्यमन्त्री आदरणीय श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी की प्रेरणा से संस्कृत भाषा में प्रवीण एवं बडे समाज को निर्मित करने के उद्धेश्य से युनिवर्सिटी ने एक लाख छात्रों को संस्कृत संभाषण में दक्ष बनाने के निमित स्वर्णिम संकल्प को क्रियान्वित किया। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थिओं ने संस्कृत सम्भाषण योजना में सोत्साह भाग लिया। यह भगीरथ कार्य भगवान् श्री सोमनाथ की कृपा-प्रसाद से दिसम्बर २०१० में पूर्ण हुआ।

Scanned with CamScanner

स्वर्णिम गुजरात संस्कृत सम्भाषण योजना

इस आयोजना का प्रारंभ २००९ के जुलाई महीने में किया गया। यह कार्यक्रम अपने आप में एक अभिनव प्रयोग तथा भारत में पहला प्रशस्त कार्यक्रम था, जो श्रमसाध्य तो था ही, इसके साथ एक समुचित आयोजन-प्रबन्धन की अपेक्षा रखता था; लेकिन भगवान् सोमनाथ की कृपा एवं राज्य सरकार का संस्कृत भाषा एवं साहित्य के प्रति रचनात्मक तथा आर्थिक सहयोग एवं श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपतिजी के साथ संस्कृत-भारती के अपेक्षित सहयोग के कारण यह कार्यक्रम कई प्रकार के विचार-विमर्श एवं कार्ययोजनाओं के दौर से गुजरा।

इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन की प्रारंभिक अवस्था में सबसे पहेले एक शीर्षस्थ-समिति का गठन, माननीय कुलपति प्रो. पंकज एल. जानीजी की अध्यक्षता में किया गया। इसी श्रृंखला में इस कार्य को सम्पूर्ण गुजरात राज्य में लागू करने की दृष्टि से जिलास्तरीय समितियों का क्रमिक गठन किया गया।

दीप से दीप जलाओ की नीति पर प्रशिक्षको के द्वारा कार्य-योजना के तहत ४० घंटेका पाठ्यक्रम बनाया गया तथा यह पाठ्यक्रम प्रशिक्षक वर्ग एवं प्रशिक्षु वर्ग के लिए अलग-अलग बनाया गया। प्रशिक्षकों के २०-२२ वर्ग बनाकर उन्हें प्रभावी ढंग से संस्कृत संभाषण का निर्धारित पाठ्यक्रम पढाने के लिए अन्य २००० (दो हजार) प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए दक्ष किया गया। प्रशिक्षुओं की रहने, भोजन एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी द्वारा की गयी थी। यह उल्लेखनीय है कि पाँच से सात दिवसात्मक संस्कृत प्रशिक्षण के कार्यक्रम को ऐसे आयोजित किया गया जिसमें सरस एवं सहज संस्कृत का बोलबाला हो एवं लोग स्वयं इसकी ओर खींचे चले आए।

इस प्रकार गुजरात सरकार के अथाक प्रयास एवं आर्थिक सहयोग से गुजरात राज्य के एक लाख से अधिक नवयुवकों एवं अन्योने संस्कृत संभाषण कर सकने में अपने को सक्षम पाया। इस भगीरथ कार्य को पूर्ण करने के लिए युनिवर्सिटी परिवार के सभी सदस्यों, कार्यकारिणी तथा विद्वत् परिषद के महानुभावों, संस्कृत भारती के अध्यक्ष एवं महामन्त्रीजी, जिलास्तरीय संयोजक, विद्याभारती के अधिकारी, संलग्न महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यश्री तथा प्राध्यापकश्रीओं के अथाग परिश्रम से यह कार्य परिपूर्ण हुआ।

प्राचीन समय में देव-दानवों के संवाद से समुद्रमन्थन हुआ, इस समुद्रमन्थन के माध्यम से अनेकविध रत्न प्राप्त हुए, अन्तिम रत्न के रूप में अमृतकुम्भ प्रकट हुआ जिसको भगवान् विष्णु ने स्वयं धारण किया था। अमृत के पान से देवों ने अमरत्व प्राप्त किया था। इसकी स्मृति में भारतवर्ष में कुम्भमेलों का आयोजन किया जाता है।

गुजरात राज्य के स्वर्णिमजयन्ति वर्ष के उपलक्षमें श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी के द्वारा एक लाख जिज्ञासु छात्रों को संस्कृत सम्भाषण की शिक्षा से दीक्षित करने का एक अद्भूत, अभूतपूर्व, आर्षदृष्टिजन्य, दिशोद्देशक अनपुम संकल्प था, जिस संकल्प की सम्पन्नता का द्योतक महाकुम्भ समारोह श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी के परिसर में गुजरात राज्य के महनीय माननीय मुख्यमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी की प्रेरक प्रभावक अध्यक्षता में किया गया।

इस समापन समारोह का नामाभिधान

Scanned with CamScanner

स्वर्णिम-गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उपत्पन्नोऽसि तदा कुम्भः विधृतो विष्णुना स्वयम्॥

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ था जिसके भीतर यह भावना निहित थी कि यह समारोह संस्कृत के सन्दर्भ में अपने आप में विशाल, पावन एवं पोषक अभूतपूर्व सम्मेलन था, गुजरात राज्य की संस्कृत चेतना को परिपुष्ट तथा दैदीप्यमान करने वाला यह अनुपम कार्यक्रम जो सत्यार्थ में संस्कृत का महाकुम्भोत्सव था।

इस महाकुम्भ में तीन दिनों तक अनेकविध संस्कृत-संस्कृति संबंध कार्यक्रम आयोजित किए गए थे, जिसमें विशाल समारम्भ-उद्घाटन समारोह, संस्कृत यात्रा, विविध प्रदर्शनीयां, संस्कृत पत्रकार संगोष्ठी, राष्ट्रिय परिसंवाद, संस्कृत कविसम्मेलन, अखिलभारतीय प्रतियोगिताएँ, संस्कृत सम्भाषणयोजना अन्तर्गत स्पर्धाएँ, युनिवर्सिटी युवक महोत्सव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान-मानित विश्वविद्यालय नव देहली के सहयोग से भासनाट्य-महोत्सव, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, संस्कृत साहित्य अकादमी-गांधीनगर तथा युनिवर्सिटी संचालित संस्कृत कोलेज के सहयोग से आयोजित राज्यस्तरीय संस्कृत शास्त्रीय वाक्प्रतियोगिता एवं शलाका परीक्षा इत्यादि का आकर्षक आयोजन किया गया।

ता. ३ दिसम्बर २०१० के दिन श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी परिसर में गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमंत्रीजी आदरणीयश्री नरेन्द्र मोदीजी के करकमलों से इस 'स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ' का उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर संस्कृत संभाषण के पाठ्यक्रम को पूरा किये हुए राज्य के लगभग बारह हजार छात्र जो संभाषण में दक्ष एक लाख से अधिक छात्रों के प्रतिनिधि के रूप में यहाँ विश्वविद्यालय परिसर में उपस्थित थे।

उद्घाटन-मंच पर माननीय मुख्यमन्त्रीजी के अतिरिक्त गुजरात राज्य के माननीय शिक्षामंत्रीजी श्री रमणलाल वोराजी, माननीय वित्तमन्त्रीजी श्री वजुभाई वालाजी, उच्च तकनिकी शिक्षा राज्यमन्त्रीजी प्रो. वसुबेन त्रिवेदीजी, माननीय संसदीय सचिव श्री एल. टी. राजाणीजी, सोमनाथ विधानसभा सदस्य श्री राजसीभाई जोटवाजी, शिक्षा विभाग के माननीय अग्रसचिव डॉ. हसमुख अढियाजी (भा.प्र.से.), युवा, सांस्कृतिक एवं खेल विभाग के माननीय सचिव श्री भाग्येश झाजी (भा.प्र.से.), राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान मानित विश्वविद्यालय नई दिल्ली के माननीय कुलपतिजी प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठीजी, तिरूपति राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपतिजी प्रो. हरेकृष्ण शतपथीजी, जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय पुरि के माननीय कुलपतिजी प्रो. निलकंठपतिजी, संस्कृत भारती के राष्ट्रिय महामन्त्री श्री चमूकृष्ण शास्त्रीजी, सौराष्ट्र युनिवर्सिटी के माननीय कुलपतिश्री प्रो. कमलेश जोशीपुराजी, जगन्नाथ संस्कृत विश्व विद्यालय पुरि के माननीय पूर्व कुलपतिजी प्रो. रामकरण शर्माजी, वयोवृद्ध संस्कृतज्ञ श्री वी. एन. गाडगीलजी, एवं अन्य संस्कृतानुरागीजन उपस्थित थे। सभा के प्रारंभ में माननीय कुलपति प्रो. पंकज एल. जानीजी ने माननीय मुख्यमंत्रीजी सह उपस्थित अन्य विद्वज्जनों का शाब्दिक पुष्प से स्वागत किया और माननीय मुख्यमन्त्रीजी की शुभ प्रेरणा 'वेद से वेब की ओर' एवं 'उपनिषद् से उपग्रह की ओर' यात्रा को आगे बढाने का विश्वास दिलाया।

माननीय कुलपतिजी प्रो. शतपथीजीने तथा संस्कृतभारती संस्थान के माननीय राष्ट्रिय महामन्त्री श्री चमूकृष्ण शास्त्रीजीने गुजरात की इस पहल के लिए माननीय मुख्यमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदीजी को अभिनन्दन दिया तथा अपने वक्तव्य में महानुभवों ने

कहा कि गुजरात में हुए संस्कृत सम्भाषण के इस प्रयोग का भारत देश के अन्य राज्य भी अनुकरण करेंगे। कार्यक्रम के अन्त में विश्वविद्यालय के कुलसचिवजी डॉ. विष्णु पुरोहितजी ने आभार प्रदर्शन किया।

Scanned with CamScanner

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ उद्घाटन समारोह
के उद्घाटक एवं अध्यक्ष श्री नरेन्द्र मोदीजी।
माननीय मुख्यमन्त्रीजी, गुजरात

Scanned with CamScanner

आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदीजी
गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमन्त्रीजी का प्रेरक उद्बोधन

संस्कृतप्रेमी भाईओं और बहनो! अच्छा होता मैं कुछ संस्कृत में बोल लेता। मैं जब संस्कृत में भाषण सुन रहा था तब लग रहा था, आप को भी लगता होगा कि संस्कृत इतना सरल एवं सहज है! थोडा सा अगर प्रयास हम करें तो इसे भी सीख सकते हैं। यहाँ मैं देख रहा था कि इस संस्कृत के कार्यक्रम का एक एक शब्द यहाँ बैठे सब विद्यार्थीयों को अच्छी तरह समझ आ रहा था।

दुर्भाग्य से हमारे यहाँ संस्कृत को जीवन के हिस्से से हटाकर के क्लासरुम की चार दीवारी में बन्द कर दिया गया और उस का परिणाम यह हुआ कि यह महामुनियों की बौद्धिक सम्पदा हमारे देखते ही देखते नष्ट होती जा रही है।

मैं संस्कृतभारती के मित्रों का, श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी का और संस्कृत प्रेमी सभी महानुभावों का राज्य की तरफ से बहुत बहुत साधुवाद करता हूँ। बहुत अभिनन्दन करता हूँ। उन्होंने बहुत बडा काम किया है।

गुजरात का स्वर्णिम जयन्ती का अवसर आज नहीं तो दस, पन्द्रह या बीस वर्षो बाद रंग लाएगा एवं कुछ तो सुज्ञजन इस पर किताब लिखेंगे कि वास्तव में स्वर्णिमजयन्ती कैसे मनायी जाती है; क्योंकि आम तौर पर इस प्रकार के समारोह तो होते ही रहतें हैं। लेकिन वास्तव में इन अवसरों पर होता क्या हैं ? जिस संस्था की गोल्डन ज्युबिली होती है तथा जो उसके करने-धरने वाले लोग होते हैं उनकी वाह-वाह होती है तथा उनका मालाओं से सम्मान होता है तथा कल्चरल नाईट का आयोजन होता है और बात वहीं समाप्त हो जाती है।

इस के विपरीत हमने गुजरात के स्वर्णिम जयन्ती के अवसर को गुजरात की कैपेसिटी बिल्डिंग के लिए उपयोग किया है। हमने गुजरात के स्वर्णिमजयन्ती के अवसर को उभारने के लिए विशेष अवसर के रूप में और जब स्वर्णिमजयन्ती कार्यक्रमों की रचना हो रही थी तब यह विचार मन में आया कि स्वर्णिमजयन्ती अवसर पर हम इस राज्य के एक लाख नागरिकों को संस्कृत सम्भाषण सिखा सकते हैं। जब मैंने एक लाख शब्द कहा था तो कई लोगों को आश्चर्य हुआ था, उस मीटिंग में कोई संस्कृत पंडित नहीं था; बल्कि वे सब सरकारी अफसर थे। उस समय तो एक अजूबा लग रहा था-कि क्या यह सम्भव हो सकता है? इसके बाद हमने सबको रास्ता बताया इस कार्य में हमें कौन - कौन लोग मदद कर सकते हैं। हमने उसकी जानकारी दी तथा चमूकृष्णशास्त्रीजी एवं संस्कृतभारती के अधिकारिओं से परिचय करवाया। इस संदर्भ में यह विचार आया कि जितने भी संस्कृतप्रेमी तथा मनीषी हैं उनको

उपस्थित जनसमुदाय

Scanned with CamScanner

आदरणीय श्री रमणलाल वोराजी, माननीय शिक्षा मन्त्रीजी
द्वारा स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ स्मरणिका विमोचन तथा
आदरणीया प्रो. वसुबेन त्रिवेदीजी, माननीय उच्च एवं तकनिकी शिक्षा राज्य मन्त्रीजी
द्वारा सोमज्योति विशिष्ट अंक का विमोचन ।

माननीय मुख्यमन्त्रीजी के प्रेरक उद्बोधन पर उपस्थित विशाल संस्कृतानुरागी जनसमुदाय

खोजना चाहिये तथा इस कार्य में उनकी मदद लेनी चाहिये। इस प्रकार राज्य सरकार ने एक अलग प्रकार का पुरातत्व का काम किया। आर्कीओलोजी वाले पथ्थर खोजते है, इमारते खोजते है। हमने उससे बाहर निकल कर संस्कृत के पण्डितों को खोजने का काम शुरु किया इसका परिणाम यह हुआ कि सब की शक्ति लगी और राज्य के अन्दर एक लाख लोगों ने संस्कृत सम्भाषण के साथ अपने आपको जोडा, संस्कृत बोलने लगे, उनको कोन्फिडेन्स के लिए एक मंच मिला।

कभी-कभी हमें लगता है कि संस्कृत बोलना नहीं आयेगा, क्या कभी हमने यह सोचा कि कोई गुजराती भाषा जब तक हमें नहीं सिखाएगा तब तक हमें गुजराती नहीं आयेगी ? घर में बात करते करते हम गुजराती भाषा सीख जाते हैं । जब भाषा जीवन का हिस्सा होती है तो वह सहज रूप में आ जाती है। उदाहरण के तौर पर यदि हमारे घर में कोई अनपढ नौकर भी होता है जिसे कुछ भी नही आता - तो भी वह फोन उठाता है - और बोलता है हेलो!, अरे! 'हेलो' किस भाषा का शब्द है ? वह तो अनपढ है। लेकिन उसको मालूम है कि फोन उठाने के बाद हेलो बोला जाता है। उसको उतनी अंग्रेजी आ गई। यह सहज जीवन का हिस्सा बन जाता है। यदि हम संस्कृत को अपने जीवन के हिस्से के रूप में नहीं जोडेंगे तो यह बहुत बडी महामुनियों द्वारा दी गई सम्पत्ति हमारी आंखो के सामने से ओझल हो जायेगी।

मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि देश के आजाद होनेके बाद जो हमारी सांस्कृतिक विरासतें थी उसकी रक्षा करना तो हमारा कर्तव्य था, परन्तु दुर्भाग्य से हमारा देश ऐसे विचार प्रवाह में बह चला जिस से यह सोच बन गई कि देश का जो कुछ भी है वह बेकार है, जब तक बाहर वाला नहीं आएगा तब तक हमारा देश प्रगतिशील देश नहीं माना जा सकता। इस मानसिक गुलामी का परिणाम हूआ कि हमने अपना खो दिया, देखते ही देखते हम ने आपना नष्ट कर दिया। क्या कभी किसी ने सोचा है कि दुनिया की सबसे प्राचीन संस्कृति तथा जीवन-व्यवस्था अनेक संकटों से गुजरती हुयी अनेक आक्रान्ताओं के बीच से विजयी होकर आयी है। कुछ तो उसके अन्दर दम होगा जो कि हजारों वर्षों के संकट के बाद भी आज खड़ी है। और वह कौन सी भाषा है जो उस सम्पदा तक ले जा सकती है; वह क़ौन सी व्यवस्था है जो इस भाषा के माध्यम से उस युग के अन्दर लोगों तक पहुँचाया गया होगा और सारे सवालों का उत्तर एक ही मिलता है- कि वह संस्कृत-भाषा है। हमारे पुराने खजानों को अगर जानना है- तो हमें संस्कृत सीखना होगा।

आज भी एशियन कन्ट्रीज के संस्कृत के स्कोलर हमारे देश में आते हैं। जर्मनी में देखिये! लोग संस्कृत अध्ययन के लिए अत्यधिक उत्सुक हो रहे हैं। लोगों ने संस्कृत के साथ आयुर्वेद को अपनाना शुरु कर दिया है। यह इतनी बडी सम्पदा है कि यदि इसके लिए देश में माहौल बने तो आज नहीं तो कल देश का अवश्य विकास होगा।

मुझे स्मरण है कि जब श्री मोरारजी भाई की सरकार थी तब उस समय कुछ लोगों ने आग्रह किया था कि रेडियो पर संस्कृत में समाचार क्यों नहीं सुनाये जाते? श्री मोरारजी भाई के समय में संस्कृत में समाचार-पठन प्रारंभ हुआ। लेकिन कुछ सालों से इस बात को लेकर सरकार में फाइलें चल रहीं है कि दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले संस्कृत-समाचार को सुनने वाले बहुत कम है - तथा खर्च

महानुभावों का अभिवादन

बहुत आता है, इस लिए इसे बन्द कर देना चाहिए। ये फाइलें चल रही हैं - एवं कभी-कभी सरकार भी बन्द करने केलिए मन बना लेती है। लेकिन फिर समाज का दबाव बन जाता है - तो मामला अटक जाता है। लेकिन मामला अभी भी अटका हुआ है। जब लोग बोलते नहीं, सुनते नहीं तो इस संस्कृत को छोड दो- ऐसी ही मानसिकता का यह परिणाम है कि संस्कृत की यह हालत है।

जब मैंने संस्कृत विश्वविद्यालय को शुरु किया तब मुझे लोग कहते थे- इससे क्या निकलेगा ? मैं ने कहा आप जब टेक्निसियन बनाओगे तब इसमें प्राण भरने का काम संस्कृत-युनिवर्सिटी के विद्यार्थी करेंगे।

एक मूर्तिकार मूर्ति बनाता है - लेकिन संस्कृत का पण्डित इसमे प्राणप्रतिष्ठा करता है - जिससे मूर्ति भगवान् बन जाती है। समाज में जीवन की प्राणप्रतिष्ठा करने का सामर्थ्य इस परम्परा में है। तय तो देश को करना है - कि हमें टेक्नोलोजी विज्ञान के साथ सच्चे अर्थ में इंसान तैयार करने हैं तो हमें टेक्नोलेजी विज्ञान के साथ-साथ इस कला एवं संस्कृति को भी पैरलल में चलाना हैं - तभी तो देश बन सकता है। कोई भी देश रोबोटों का देश नहीं हो सकता। संवेदनाओं से भरा हुआ देश होता है। राष्ट्र का अपना चिन्तन होता है, और उसी के बदौलत राष्ट्र विकास करता है। और यह सामर्थ्य संस्कृत में है।

बहुत कम वर्ष हुए इस संस्कृत-युनिवर्सिटी को- लेकिन इसने आज देश में अपनी जगह बना ली है। और यह भी आनन्द का विषय है कि चारों तरफ से संस्कृत विश्वविद्यालय से लोग जुड़ रहे हैं। गुजरात में हमारे यहाँ बहुत सी पाठशालाएँ चल रही हैं। सरकार उनको एक नया पैसा ग्रान्ट नहीं देती थी। मैं ने निर्णय किया कि संस्कृत पाठशालाओं को वेतन दिया जाए एवं देना शुरु किया। हमें तो इसे बढ़ावा देना था। आज श्री सोमनाथ संस्कृत-युनिवर्सिटी में ८० से ज्यादा नवजवान, संस्कृत में पी. एच. डी. कर रहे हैं। इस से संबद्ध एक-एक अध्ययन जो होगा; मैं समझता हूँ कि वह समाज के लिए बहुत बड़ी विरासत बनने वाला है।

आज दुनिया में स्थापत्य-कला की चर्चा होती है। मैं तो यह चाहता हूँ कि स्थापत्य-कला - आर्किटेक्चर के सेमिनार हो तो एक-दो संस्कृत वक्ता को भी उसमें बुलाना चाहिए - जो परम्परागत संस्कृत के जनाकार हों तथा संस्कृत में आर्किटेक्चर के बारे में क्या वर्णन किया गया है - वे बताएँ, तब दुनिया की आँखे खुलेंगी कि हमारे पूर्वजों ने स्थापत्य के क्षेत्र में कितने काम किये है।

आज संस्कृत का उपयोग कहाँ होता है - जब आदमी कष्ट में होता है, जब चिन्तित होता है - जब उसे लगता है कि जिन्दगी का ह्रास हो रहा है। कुछ सपने सजोता है कि यह होगा कि नहीं होगा - बेटी की शादी होगी की नहीं होगी। सही जामाता मिलेगा की नहीं। इन्टरव्यू में जायगा तो पास होगा या नहीं, नौकरी मिलेगी की नहीं। इन सभी जवाबों के लिए वह भविष्यवेत्ता के पास जाता है। वहां उसका संस्कृत के साथ सम्बन्ध होता है। जो जितना अधिक संस्कृत का जानकार भविष्यवेत्ता होगा - वह उतना ही भरोसेमंद होगा। इसके बाद उसके अनुरूप कपड़े अच्छे हों तो और अच्छा होगा। लोगों की उसके प्रति श्रद्धा बढ़ जाती है। जैसे फेमिली डॉक्टर लोग रखते हैं - वैसे ही फेमिली एस्ट्रोलोजर भी लोग रख लेते हैं।

यह एक ऐसा क्षेत्र है जब द्विधा होती है तब लोग वहाँ चले जाते हैं। भाइयों एवं

Scanned with CamScanner

बहनो ! केवल व्यक्तिगत जीवन की नहीं, राष्ट्र को भी दुविधा से निकलना है तो महाविरासत संस्कृत की शरण में जाना होगा। आज विश्व बहुत बड़े संकट से गुजर रहा है। ग्लोबल वोर्मिंग की चर्चा हो रही है - कारण है कि हजारों वर्षों की जीवन व्यवस्था को लेकर जीने वालों ने ऐसा पाप किया, जिसके कारण मानव जाति के लिए 'ग्लोबल वार्मिंग' की समस्या आयी। कार्बन से ग्रसित वह जमाना क्या था और क्या कारण था तथा दो सौ साल के भीतर-भीतर वह कौन सी जीवन व्यवस्था विकसित हुयी जिसने आज मनुष्य को भयभीत कर के रख दिया है।

इसका सीधा जवाब है - हमारे पूर्वजों ने जो हमें जीवन व्यवस्था दी थी पर वह प्रकृति के साथ संघर्ष की जीवन व्यवस्था नहीं थी - प्रकृति के साथ प्रेम की जीवन व्यवस्था थी। प्रकृति-शोषण, हमारे पूर्वजों ने नहीं सिखाया था। क्या आज दुनिया में हो रहे ग्लोबलवार्मिंग का जबाव हमारे शास्त्रों में उपलब्ध है ? मैं चाहता हूँ कि गुजरात के संस्कृत के पण्डित "ग्लोबलवार्मिंग एण्ड संस्कृत लिटरेचर" - विषय पर सेमिनार का आयोजन करें तथा पी.एच.डी. के माध्यम से संशोधन कार्य करें। मैं विश्वासपूर्वक कहता हूँ कि ग्लोबल वार्मिंग की समस्याओं का जबाव हमारे संस्कृत साहित्य में उपलब्ध हैं, तथा दुनिया को इस संकट से बचाने की ताकत इस संस्कृत-साहित्य में पड़ी है और हमें भी थोड़ी बहुत स्ट्रेटेजी को बदलना चाहिए। एम.बी.ए. के कोर्सिस हो रहे हैं। क्या संस्कृत के जमाने में एम.बी.ए. एवं बिझनस मैनेजमेंट था या नहीं ? कुछ दिन पहले मैं भी एक किताब पढ़ रहा था- रामायण एण्ड पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन। एक-एक घटना रामायण की लेकर जो वर्णन किया गया है-वह बहुत अच्छा है। गीता एवं मैनेजमेंट पर तो ढेर सारी पुस्तकें लिखी गयी हैं। आधुनिक मैनेजमेंट के सिद्धान्त गीता में दिख रहे हैं। ह्यूमन डेवेलपमेंट की चर्चा ही करते हैं। हमारे शास्त्रों में भरपूर इसकी व्यवस्था का वर्णन है। अथर्ववेद को हम इस सन्दर्भ में देखें तो हमें समर्थन मिलता है कि हम प्राकृतिक जीवन के साथ कैसे जुड़े रह सकते हैं।

ऋग्वेद को देखने से यह पता लगता है कि हमें किस रास्ते पर चलना चाहिए। हमारे पास इतनी भारी सम्पदा पडी है, तो हम इसका सही उपयोग करें। हमें नयी खोज करने की जरूरत नहीं है। बल्कि आप उसे समझे कि उन सिद्धान्तों का हम कैसे उपयोग कर सकते हैं। मैं समझता हूँ कि यदि हमारे संस्कृत क्षेत्र के लोग मानवजाति के संकटो से निकलने के रास्ते खोज कर दुनिया के सामने लायें तो संस्कृत रिलेवेंट हो जायगी। लोगों के लिए यह संस्कृत अनिवार्य हो जायगा। लोगों को लगेगा कि अगर समस्याओं का समाधान इस शास्त्र में है तो वे जरूर खोज करेंगे।

मित्रों ! मुझे विश्वास है कि संस्कृत में सभी समस्याओं का समाधान है। यह महाकुंभ तो एक प्रयास है। इस महाकुंभ की सफलता को केवल एक मैं शुमारंभ मानता हूँ, क्योंकि मेरे सपने इससे भी बहुत बड़े हैं। एक लाख लोग संस्कृत में संभाषण करें - यह हिन्दुस्तान की पहली घटना है। मैं चाहता हूँ, राष्ट्रिय कविसम्मेलन जो हजारों साल से कवि सम्मेलन यहाँ राष्ट्रिय स्तर के नहीं हुए - यह एक ऐतिहासिक घटना है। परन्तु इसके बावजूद मैं मानता हूँ कि संस्कृत-भाषा एवं

Scanned with CamScanner

साहित्य के प्रसार के क्षेत्र में हमें और अधिक आगे जाना है। और भी विकास करना है, और भी ऊँचाई को प्राप्त करना है; और मानव जाति को संकटों से बाहर निकालने के लिए जो हमारी विरासत है इसके सहारे हमें आगे बढ़ना है। हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि हमें जितना दूसरे विरासतों को बचाने की चिन्ता रहती है तथा उसमें मीडिया-कर्मी भी लगे रहते हैं - उतनी चिन्ता इस संस्कृत-विरासत को बचाने एवं विकसित करने की नहीं होती। यह जो फर्क है यह पीड़ा देती है। लेकिन मुझे विश्वास है कि आज नहीं तो कल कोई न कोई तो आयेगा जो इस नये युग को लायेगा तथा इस परिवर्तन को स्वीकार करेगा। और तब जाकर दुनिया बदलेगी।

गुजरात में जिन युवकों को कोई आर्थिक लाभ की गारन्टी नहीं है, फिर भी इस देश की संस्कृति के प्रति प्रेम के कारण इस संस्कृत-संभाषण में हिस्सा ले रहे हैं - मैं उन सभी विद्यार्थीयों का बहनों एवं भाईयों का हृदय से अभिनन्दन करता हूँ।

इस कार्य को करने के पीछे जिन आचार्यों ने शिक्षकों ने, संस्कृत के प्रति प्रेम करने वाले नागरिकों ने अपना समय निकालकर के इस अभियान को आगे बढ़ाया है - वे सब भी इस अभिनन्दन के अधिकारी हैं।

गुजरात की स्वर्णिमजयन्ती के अवसर पर एक वर्ष के अन्दर जो भी कार्यक्रम आयोजित हुए हैं वे आने वाली पीढ़ियों के लिए विरासत के रूप में नींव डालने वाले है - उसमें यह संस्कृत-संभाषण का कार्यक्रम प्रथम पंक्ति का कार्यक्रम बन कर रहेगा - यह मेरा अटूट विश्वास है। मैं एक बार फिर सब का अभिनन्दन करता हूँ। देशभर के संस्कृत-युनिवर्सिटी से आये हुए सभी महानुभावों का इस गुजरात की धरती पर मैं स्वागत करता हूँ, और आप सब का आवाहन करता हूँ कि आइये! इस गुजरात में अपने पाण्डित्य का उपयोग कीजिए और एक नयी परम्परा को तैयार करने के लिए अपनी सहयोगात्मक एवं रचनात्मक शक्ति का उपयोग कीजिए, हम आपका साथ देने के लिए तैयार हैं।

॥ जय जय गरवी गुजरात ॥

॥ जय जय स्वर्णिम गुजरात ॥

....

Scanned with CamScanner

स्मरणिका विमोचन

उद्घाटन समारोह के दौरान गुजरात राज्य के माननीय शिक्षा मन्त्री आदरणीय **श्री रमणलाल वोराजी** ने स्वर्णिम गुजरात संस्कृत सम्भाषण योजना एवं स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ की **'स्मरणिका'** का विमोचन किया। माननीय उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मन्त्री आदरणीया **प्रो. वसुबेन त्रिवेदीजी** ने श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी की पत्रिका **'सोमज्योति'** के विशिष्ट अंक का विमोचन किया। राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान मानित विश्वविद्यालय, दिल्ली से पधारे माननीय कुलपतिजी **प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठीजी** ने 'गुर्जरधरे विभासि' संस्कृत गीत सी. डी. का विमोचन किया। विश्वविद्यालय परिवार की तरफ से समारोह के दौरान विशिष्ट महानुभावों का अभिवादन किया गया।

गौरवशाली गुजरात राज्य की महिमा गान करते हुए संस्कृत गीत की नृत्य के रूप में मंच पर प्रस्तुति की गई साथ ही विद्यार्थिओं एवं अध्यापकों ने 'स्वर्ग से स्वर्णिम गुजरात तक' संस्कृत नाटक मंच पर प्रस्तुत किया। इस महाकुम्भ में संस्कृत सम्भाषण निपुण विद्यार्थी, संस्कृत विषय के विद्वान प्राध्यापक, विषय विशेषज्ञ विद्वत महानुभाव, संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपतिश्री, अधिकारी गण एवं संस्कृत में रूचि रखने वाले अन्य महानुभावों एवं छात्रों के साथ लगभग १५००० लोग उपस्थित रहे।

राष्ट्रिय संस्कृत परिसंवाद

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुंभ के उद्‌घाटन सत्र के पश्चात् अपराह्न में एक राष्ट्रिय संस्कृत परिसंवाद का भी प्रारंभ हुआ। इस परिसंवाद का विषय था- **'संस्कृत वाङ्मय एवं आधुनिक समाज'**। इस केन्द्रीय विचारधारा के अन्य विषय भी आनुषंगिक विषय वक्ताओं, शोधपत्र प्रस्तुतकर्ता तथा परिसंवाद में भाग लेने वालों के लिए निर्धारित किये गए थे।

इस परिसंवाद के उद्‌घाटन सत्र की अध्यक्षता का सफल निर्वहण डॉ. गौतमभाई पटेल गुजरात के प्रख्यात संस्कृत मनीषी ने किया तथा डॉ. राजेन्द्र नाणावटीजी इस सत्र में सारस्वत अतिथि के पद पर आसीन थे। इस सत्र में श्री वसन्तजी गाडगिल उपस्थित थे।

इस सत्र में विभिन्न विषयों पर विद्वानों ने अपने शोधपत्र एवं व्याख्यान प्रस्तुत किये जिनमें श्री जगद्‌गुरु रामानन्द राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. ताराशंकर पाण्डेयजी ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया तथा इसी क्रम में डॉ. नाणावटीजी तथा अमेरिका से पधारे डॉ. वेदालंकारजी ने अपने संक्षिप्त व्याख्यानों में संस्कृत वाङ्मय की उपादेयता, सामयिकता, वैज्ञानिकता एवं इसके सामाजिक भूमिका पर प्रभूत प्रकाश डाला। पं. वसन्त गाडगिलजी ने अपने व्याख्यान में स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत की भूमिका के साथ अन्य संस्कृत की ऐतिहासिक भूमिकाओं पर ओजस्वी वक्तव्य देकर संस्कृत के विकासधारा के कुछ अज्ञात पहलुओं को श्रोताओं के समक्ष उपस्थित किया तथा स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुंभ के अनुष्ठान के आयोजन के लिए गुजरात राज्य एवं श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

इस द्विदिवसीय परिसंवाद के उद्‌घाटन सत्र में बोलते हुए डॉ. गौतमभाई पटेलने संस्कृत वाङ्मय के वैविध्यपूर्ण स्वरूप को आधुनिक समाज से सम्बद्ध करते हुए संस्कृत को एक व्यापक साहित्य बताया तथा कहा कि इसके अध्ययन करने से व्यक्ति-समाज-राष्ट्र एवं विश्वकल्याण के विषय में मानवता की भूमिका का पता लगता है।

इसी प्रकार अमेरिका से पधारे डॉ. वेदालंकारजी ने पूर्व एवं पाश्चात्य देशों में संस्कृत वाङ्मय के अध्ययन से परिवार, व्यक्ति एवं समाज में रचनात्मक दृष्टि मिलने की बातें कही तथा इसके प्रचार-प्रसार पर विशेष बल देने के लिए गुजरात राज्य की तथा श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय की भूमिका की सराहना की।

इस परिसंवाद के द्वितीय दिन के तीसरे सत्र में श्री सोमनाथ सस्कृत युनिवर्सिटी के माननीय कुलपति प्रो. पंकज एल. जानीजी स्वयं उपस्थित हुए तथा इस परिसंवाद के लिए आगन्तुक विद्वानों के समक्ष कुछ चुनौतीपूर्ण ऐसे विषय उपस्थापित किये जिन पर अगर शोधकार्य हो तो अवश्य ही भारतीय समाज संसार के सामने एक आदर्श उपस्थापित करेगा। इन प्रश्नों में आयुर्वेद एवं चिकित्साशास्त्र से सम्बन्धित ऐसे प्रश्न थे- जिनके उत्तर एवं प्रयोग के आधार पर आज भी अभिमन्यु एवं अन्य पौराणिक प्रज्ञावान् शिशुओं को जन्म दिया जा सकता है। इसके लिए माननीय मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी की 'वेद से वेबसाईट' एवं 'उपनिषद् से उपग्रह' तक के वैज्ञानिक रहस्य को संस्कृत वाङ्मय में अनुसन्धान के लिए आपने विद्वानों का आह्वान किया।

प्रो. पंकज एल. जानीजी ने इसी प्रकार वास्तु एवं ज्योतिष से सम्बन्धित अनेक जिज्ञासाएँ इस परिसंवाद में उपस्थापित की जिनका समाधान यथासाध्य ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र के विद्वान् जयपुर से पधारे डॉ. विनोद कुमार शर्मा ने किया।

इसके अतिरिक्त इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. रामराज उपाध्याय पौरोहित्य विभागाध्यक्ष, श्री ला. ब. शा. रा. सं. विद्यापीठ ने पौरोहित्य के माध्यम से संस्कृत वाङ्मय को प्रत्येक भारतीय परिवार में उपलब्ध बताया तथा इसके सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक पक्ष को स्पष्ट करते हुए प्रायोगिक पक्ष में माताओं-बहनों तथा धार्मिक अनुष्ठानों की भूमिका की सराहना की।

....

Scanned with CamScanner

संस्कृत - संस्कृति

प्रदर्शनी विवरण

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल द्वारा आयोजित स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ के अद्भुत विशेष आकर्षणों में एक था संस्कृत विविध प्रदर्शनीयों का महाकुम्भ। माननीय मुख्यमंत्रीजी के कर कमलों से संस्कृत प्रदर्शनी का उद्‌घाटन किया गया। इस प्रदर्शनी में भारतीय जीवन पद्धति के सभी आयामों का संस्कृत साहित्य के आलोक में भलीभाँति प्रदर्शन किया गया था - जैसे योग, आयुर्वेद इत्यादि। विशेष आकर्षण के केन्द्र थे -गोमूत्र से घड़ी का चलना तथा वैदिक ग्रन्थों में निहित विज्ञान तत्त्वों को समझानेवाले पोस्टर एवं अन्य साधन।

इसी प्रकार गुजरात के संस्कृत मनीषी श्री के. का. शास्त्रीजी की कृतियों का प्रदर्शन भी अपनेआप में अद्वितीय थी। इस संस्कृत प्रदर्शनी की विधाओं के माध्यम से एक संस्कृत के जागृत समाज को प्रस्तुत किया गया था जो आगन्तुकों को अति प्राचीनकालीन संस्कृत के समाज एवं वैदिक जीवन पद्धति की एक झलक को प्रस्तुत करता था।

प्रमुख प्रदर्शनियां निम्नानुसार थी

- *वेद प्रदर्शनी।* - *योगदर्शन प्रदर्शनी।*
- *वास्तुशास्त्र प्रदर्शनी।* - *संस्कृत गृहवास्तु प्रदर्शनी।*
- *ज्योतिपशास्त्र प्रदर्शनी।* - *संस्कृत विज्ञान प्रदर्शनी।*
- *कर्मकाण्ड प्रदर्शनी।* - *आयुर्वेद प्रदर्शनी।*
- *हस्तकला फोटो प्रदर्शनी।* - *ग्लोबल वोर्मिंग प्रदर्शनी।*
- *पुष्पक विमान शास्त्र प्रदर्शनी।*
- *पद्मश्री के. का. शास्त्रीजी के सन्मानपत्रों की एवं पदकों की प्रदर्शनी।*

महाकुम्भ के अन्तर्गत आयोजित कार्यक्रमों ने संस्कृतानुरागी सब दर्शकों का मन पुलकत किया इसी प्रकार प्रदर्शनीयों मे "संस्कृत ग्राम" लोगों के मन को आकर्षित करने में अग्रेसर रहा

Scanned with CamScanner

प्रदर्शनी

।यहां प्राचीन एवं अर्वाचीन परम्पराओं का सुभग समन्वय देखने को मिला। संस्कृत प्रेमी प्रजा के प्रतिभावों से युनिवर्सिटी के उत्साह में एक अलग सा संचार दिखाइ दे रहा था।

संस्कृत भाषा में निहित ज्ञान को भौतिक वस्तुओं से प्रगट करना प्रदर्शनी है। विविध विषयों की प्रदर्शनी ऐसी लगी थी कि एक चित्र या वस्तु के साक्षात् दर्शन के कारण एक हजार शब्द बोलने की जरूरत नहीं रहती है। वस्तु निर्देशन या चित्र से विषय वस्तु ज्यादा स्पष्ट और दृढ बन जाती है। नगरजनों में प्रदर्शनी ने एक बडा आकर्षण उत्पन्न किया था।

प्रदर्शनी के बाद दर्शकों के प्रतिभाव कुछ इस तरह के थे की क्या वास्तव में ये सब संस्कृत भाषा में है जो हमें आज पता चलता है। वेदों में कौन सा विज्ञान नहीं है? **"सर्वज्ञान मयो हि सः"** यह वेद प्रशंसा वचन सार्थकरूप में देखने को मिला और प्रदर्शनी देखने के बाद दर्शकों में संस्कृत भाषा के प्रति आस्था श्रद्धा और भी बढी, तथा विश्वास हुआ कि वास्तविक रूप में ज्ञान हमारे वेदों में भरा पडा है। भारत एक आध्यात्मिक देश होने के साथ विदेशों को और वैज्ञानिकों को नया- नया मार्ग दिखाने वाला देश है -यह सब हमारी ग्रन्थ समृद्धि और प्रदर्शनियां देख कर सुनिश्चित होता है।

संस्कृत भाषा के प्रति और उसमें भी वास्तुशास्त्र-ज्योतिष-कर्मकाण्ड जैसे विषयों में दर्शकों की आस्था में वृद्धि हुई। प्रदर्शनी के माध्यम से संस्कृत को एक न केवल भाषा के रूप में किन्तु समाज में, जगत में विद्यमान सारे विषयों के उद्गम स्थान के रूप में लोगों ने जाना है, समझा है और माना है।

प्रदर्शनी कार्य में जिन महानुभावों का विशेष योगदान रहा उन में संस्कृत भारती, गुजरात प्रान्त के अध्यक्ष श्री गिरीशभाई ठाकरजी, महामन्त्रीजी श्री चन्द्रभूषण पाण्डेयजी भावनगर के प्रो. जाडेजाजी, विद्याभारती संस्था की प्रा. दक्षाबेन शुक्लजी तथा युनिवर्सिटी के अधिकारीगण, प्राध्यापक गण एवं कर्मचारी गण मुख्य हैं।

....

Scanned with CamScanner

भास नाट्य

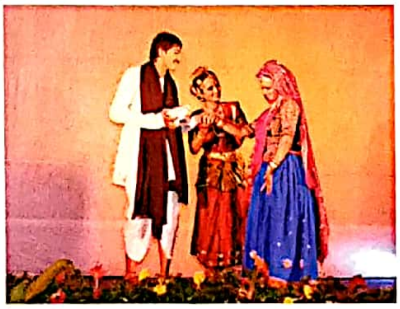

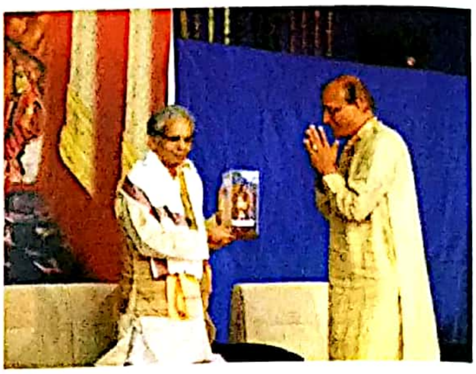

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ के अन्तर्गत राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान - नवदेहली मानित विश्वविद्यालय (मानवसंसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार) के संयुक्त उपक्रम से प्रभास तीर्थ में भास नाट्य महोत्सव का मनोरम, सुचारु एवं हृदयाह्लादक रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन सुफल और सफल हुआ।

संस्कृत नाट्यजगत में यशस्वी कवियों के नाम का प्रारंभ महाकवि भास से शुरु होता है। हास्य कवि में भास सर्वदा अग्रगामी हैं। जिस नाटक में जो रस प्रचुर मात्रा में भरा पडा है उन सब रसों का रसास्वादन प्रेक्षको ने प्रचुर मात्रा में अभिनीत नाटको द्वारा किया। दिनाङ्क ३/१२/२०१० को नाट्यमहोत्सव का उद्घाटन समारोह हुआ और तीन दिन चलने वाले इस महोत्सव में १२ नाटकों का मञ्चन हुआ। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठीजी मान. कुलपतिजी - राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान - नवदेहली के द्वारा उद्घाटन हुआ प्रो. नीलकण्ठपतिजी की अध्यक्षता में डॉ. रामकरणशर्माजी एवं श्रीनिवास रथजी की सारस्वत विशेषोपस्थिति में तथा प्रो. पंकज एल. जानीजी कुलपति - श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल एवं डॉ. गौतमभाई पटेलजी पूर्वाध्यक्ष - गुजरात संस्कृत अकादमी की विशिष्ट उपस्थिति में अभूतपूर्व रूप से भास नाट्य महोत्सव का उद्घाटन एवं मंचन हुआ। दिनाङ्क ५/१२/२०१० को प्रो. कलानाथ शास्त्रीजी, प्रो. राजेन्द्र नाणावटीजी, प्रो. वेदालंकारजी एवं प्रो. श्रीमती एस. आर. लीलाजी के सान्निध्य में तथा प्रो. पंकज एल. जानीजी की विशिष्ट उपस्थिति में समापन समारोह का आयोजन हुआ।

गुजरात राज्य में स्वर्णिम गुजरात जयन्ती वर्ष पर संस्कृत-संस्कृति-संस्कार द्वारा मनाया गया यह महाकुम्भ एवं भास नाट्य महोत्सव इतिहास में सदा सर्वदा याद किया जायेगा ऐसा दर्शकों ने अपने हृदय से भाव व्यक्त किया और संपूर्ण नाट्य महोत्सव को जन-प्रीति लोक-चाहना प्राप्त हुई जिसके लिये हम गौरव का एवं भविष्य में होने वाले ऐसे आयोजनों में हमें आत्मविश्वास प्रदान करेगा-इसका हमें विश्वास है। मञ्चन किये गये नाटक और संस्था का परिचय कुछ इस प्रकार है।

Scanned with CamScanner

महोत्सव

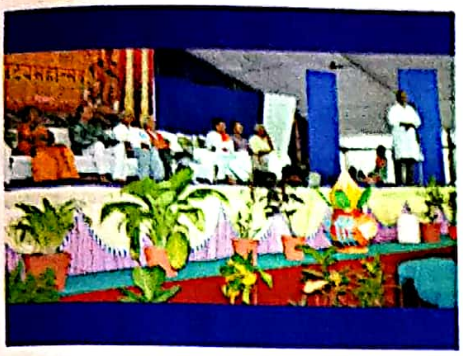

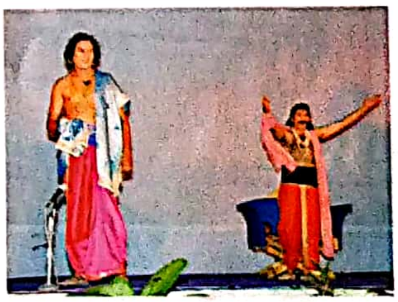

महाकवि भास प्रणीत रूपकों की प्रस्तुति

दरिद्रचारुदत्तम् – *रसध्वनि नाट्य संस्था, निर्देशिका – डॉ. उमाबेन अनन्तानी, अहमदाबाद*

दूतवाक्यम् – *श्री बाबडेश्वर संस्कृत महाविद्यालय, सांदीपनीविद्यानिकेतन, पोरबन्दर*

मध्यमव्यायोग – *राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति।*

कर्णभारम् – *त्रिवेणी नाट्य संस्था, वडोदरा। निर्देशक, डॉ. महेश शाहजी, डॉ. चारीजी*

बालचरितम् – *दर्शनम् संस्कृत महाविद्यालय, छारोडी, अहमदाबाद*

उरुभङ्गम् – *निर्देशक – डॉ. बलदेवानन्द सागरजी, जनरल सेक्रेटरी, राष्ट्रिय संस्कृत पत्रकार संघ –दिल्ली*

स्वप्नवासवदत्तम् – *चलचित्रप्रस्तुति निर्देशक, प्रो. श्रीमती लीलाजी (एम. एल. सी. कर्णाटक)*

प्रतिमानाटकम् – *श्री भागवत विद्यापीठ, सोला, अहमदाबाद।*

दूतघटोत्कचम् – *शिक्षाशास्त्रि महाविद्यालय, सोला, अहमदाबाद।*

उरुभङ्गम् – *फाईन आर्टस् कोलेज, पालनपुर, निर्देशक, प्रि. गिरीशभाई ठाकरजी,*

स्वप्नवासवदत्तम् – *निर्देशक श्री निमेष देसाई, कोरस नाट्य संस्था, अहमदाबाद।*

अन्य विशिष्ट कला प्रस्तुति

कुमारसम्भव – *चिद्विलासिनी संस्था – पूणे, निर्देशिका – डॉ. प्रज्ञा अगस्तीजी*

सुयोधनम् – *दूतवाक्यम् आधारित, निर्देशक – श्री हसमुख बाराडीजी, थीयेटर एण्ड मीडिया सेन्टर, अहमदाबाद.*

Scanned with CamScanner

राष्ट्रिय संस्कृत कवि सम्मेलन-

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ के कार्यक्रमों में राष्ट्रिय संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन एक आकर्षण का मुख्य केन्द्र था जिसके संयोजक डॉ. नरेन्द्रकुमार एल. पण्ड्या थे तथा मंच का संचालन डॉ. हर्षदेव माधवजी कर रहे थे। इस कवि सम्मेलन में राष्ट्रिय स्तर के संस्कृत कवियों ने भाग लिया जिनमें डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठीजी, डॉ. मिथिलाप्रसाद त्रिपाठीजी, डॉ. नीलकण्ठपतिजी, डॉ. शतपथीजी, डॉ. कलानाथ शास्त्रीजी, डॉ. रामकरन शर्माजी, श्री भाग्येशभाई ज्हाजी (भा. प्र. से.), डॉ. अभिराज राजेन्द्र मिश्रजी, डॉ. रमाकान्त शुक्लजी, डॉ. राजेन्द्र नाणावटीजी, डॉ. गाडगिलजी, डॉ. श्रीनिवास रथजी, सहित अन्य कवि उपस्थित थे। इस कवि सम्मेलन का आयोजन भी ता. ३ दिस. २०१० को अपराह्न में किया गया था। इस कवि सम्मेलन में कवियों ने राष्ट्रिय, अंतरराष्ट्रिय तथा संस्कृत साहित्य के साथ विविध विषयों पर अपने काव्यपाठों से तथा मधुर संगीतमय लय से श्रोताओं को मन्त्रमुग्ध कर दिया। यह एक संस्कृत काव्य रचना की परम्परा का जागृत स्वरूप था जो इस महाकुंभ में बौद्धिक ऊर्जा प्रदान कर रहा था, गुजरात राज्य एवं श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी के गौरवमयी परम्परा की वस्तुपरकता के आलोक में किया गया यह कवि सम्मेलन हमारे लिए एक गौरव का विषय है। इस कवि सम्मेलन में विश्व एवं मानवजीवन से सम्बन्धित हुए काव्य पाठ से संस्कृत काव्य की गंगाधारा आज भी प्रवाहित हो रही है - इस का प्रमाणिकरन श्रोताओं को हुआ।

दिनांक ३ दिसम्बर को पं. वसन्त गाडगिलजी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकारिता संगोष्ठी का विशेष सत्र के रूप में आयोजन किया गया, जिसमें भारत के संस्कृत पत्रकारों में डॉ. बलदेवानन्दजी सागर, डॉ. रमाकान्त शुक्लजी, डॉ. वाडेकरजी, डॉ. जनार्दन हेगडेजी, प्रो. प्रफुल्ल पुरोहितजी, डॉ. कलानाथ शास्त्रीजी, डॉ. कौशलेन्द्रजी तथा श्रीमति सुधा गाडगीलजी, सहित अन्य भी विशिष्ट विद्वान्

Scanned with CamScanner

पत्रकारसंगोष्ठी - परिसंवाद

उपस्थित थे। प्रो. पंकज एल. जानीजी कुलपति, श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी ने विशेषरूप से उपस्थित रहकर पत्रकार - संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों को ग्रंथ प्रदान कर सम्मानित किया तथा पत्रकार संगोष्ठी में स्वतंत्रता के बाद संस्कृत पत्रकारिता के उतार-चढाव के ऐतिहासिक पक्षों पर विशेष प्रकाश डाला। इसके साथ भविष्य में इस संस्कृत पत्रकारिता को सभी संस्कृत विश्वविद्यालयों तथा संस्कृत विभागों में पाठ्यक्रम के रूप में अपनाकर पढ़ाने के सुझावात्मक प्रस्ताव को पारित किया गया

अध्यक्षपद से सभा को सम्बोधित करते हुए पं. वसन्त गाडगिलजी ने श्री सोमनाथ संस्कृत युनि. के माननीय कुलपति प्रो. पंकज एल. जानीजी को इस आयोजन के लिए धन्यवाद एवं आशीर्वाद दिया तथा आगे भी इस पत्रकारिता के सन्दर्भ में संगोष्ठी करते रहने का सुझाव दिया।

राष्ट्रिय परिसंवाद का अन्तिम सत्र ४ दिस. को लगभग ४ बजे प्रारंभ हुआ तथा गुजरात से बाहर के राज्यों से पधारे विद्वानों के व्याख्यानों के साथ गुजरात राज्य के संस्कृत महाविद्यालयों, शोधसंस्थानों एवं आधुनिक विश्वविद्यालयों के संस्कृत विभागों से पधारे विद्वानों एवं शोधार्थियों ने अपने- अपने शोधपत्रों का उपस्थापन किया। इस सत्र के अध्यक्ष थे डॉ. विष्णु पुरोहित कुलसचिव श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी तथा विशिष्ट सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. जयप्रकाश नारायण द्विवेदी द्वारका शारदापीठ शोध संस्थान उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त डॉ. वाचस्पति मिश्र, प्रि. निरौलाजी, डॉ. क्षितीश्वर पाण्डेय, डॉ. गजेन्द्र पांडाजी तथा डॉ. सुनंदा शास्त्रीजी प्रभृति विद्वानों ने संस्कृत वाङ्मय के व्यापक स्वरूप एवं उसके सामाजिक सम्बन्ध पर प्रकाश डाला। राष्ट्रिय परिसंवाद एवं पत्रकार संगोष्ठी कार्यक्रम का संकलन वेद संकाय के अध्यक्ष क्षी प्रो. देवेन्द्रनाथ पाण्डेयजी तथा प्रा. कालिदास ठाकरजी ने किया।

Scanned with CamScanner

अखिल गुजरात संस्कृत संभाषण एवं शलाका प्रतियोगिता

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी द्वारा स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ का आयोजन हुआ। उसके अन्तर्गत गुजरात संस्कृत साहित्य अकादमी, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान नयी दिल्ही एवं युनिवर्सिटी संचालित संस्कृत कोलेज द्वारा संस्कृत संभाषण एवं शलाका प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। संस्कृत विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आनेवाले महाविद्यालयों के छात्रों द्वारा उत्साहपूर्ण प्रतियोगिता में भाग लिया गया। संस्कृत संभाषण प्रतियोगिता में आठ शास्त्रों पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन हुआ। जिस में व्याकरण, साहित्य, वेदान्त, सांख्य, मीमांसा, न्याय, ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र जैसे मूर्धन्य शास्त्रों में छात्रों ने अपना वक्तृत्व कौशल्य प्रदर्शित किया। इन आठ शास्त्रों में प्रथम आये छात्र भारतीय कक्षा पर बेंगलोर में अखिल भारतीय वाक्प्रतियोगिता में भाग लेने के अधिकारी बनें थे।

शलाका प्रतियोगिता में भी महाविद्यालय के छात्रों ने अपनी स्मरण शक्ति तथा उत्तम मेधा शक्ति का परिचय दिया। आज के समय में प्रश्न होगा की शलाका प्रतियोगिता क्या है? इसमें सुवर्ण की एक शलाका (दण्डी) रहती हैं उस शलाका को सामने स्थित ग्रन्थ में प्रवेश करवाते है और जिस पृष्ठ पर जिस पंक्ति पर शलाका का निर्देश होता है वहाँ से आगे प्रतिभागी को कंठस्थ शास्त्र बोलना पडता है। ग्रन्थोक्त दिशा की भाषा से अपनी स्मरणशक्ति का परिचय देना होता है। संस्कृत जगत में यह स्पर्धा खूब रोचक रहती है। इस के साथ-साथ श्लोक अन्त्याक्षरी स्पर्धा का भी आयोजन हुआ था जो लगभग छह घण्टे तक स्पर्धा का रसास्वादन श्रोतागण ने किया। यह स्पर्धा भी बड़ी रोचक होती है। गीतों की अन्त्याक्षरी तो सब ने देखी होती है परंतु श्लोकों

Scanned with CamScanner

महोत्सव

की अन्त्याक्षरी रोचक एवं कौतुकपूर्ण स्पर्धा होती है, जिस में अनुष्टुप् छन्द को छोड कर विविध छन्दों में श्लोक शुद्धि पूर्वक गाने होते है।

इस आयोजन में श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी सम्बद्ध विविध संस्कृत महाविद्यालयों के शास्त्री तृतीय वर्ष और आचार्य कक्षा के विद्यार्थीओं ने साहित्य, व्याकरण, वेद , मीमांसा, सांख्य, ज्योतिष, धर्मशास्त्र और न्याय शास्त्र की वक्तृत्व स्पर्धा में समस्यापूर्ति तथा अन्त्याक्षरी स्पर्धा में एवं न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, काव्य, पुराणेइतिहास-शलाका स्पर्धा में तथा अमरकोश-अष्टाध्यायी- कण्ठपाठ स्पर्धा में शास्त्री आचार्य कक्षा के विद्यार्थीओं ने भाग ले कर अपनी शास्त्रपारंगामी प्रतिभा का परिचय करवाया। स्पर्धाओं में विजेता विद्यार्थीओं को प्रथम-द्वितिय-तृतीय पारितोषिक प्रदान किया गया तथा सर्वाधिक गुणांक प्राप्त करनेवाले महाविद्यालय को विजय वैजयन्ती एवोर्ड प्रदान किया गया। शास्त्रीय स्पर्धाओं में प्रथम स्थान प्राप्त छात्रों को आगामी दिनों में आयोजित राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान-नई दिल्ली के द्वारा पूर्णप्रज्ञ महाविद्यापीठ बेंगलूरु में आयोजित राष्ट्रस्तरीय प्रतियोगिता में भाग ग्रहण करने का अवसर प्राप्त होगा।

महाकुम्भ के अन्तर्गत छात्रों के लिए स्वर्णिम गुजरात संस्कृत क्विझ का आयोजन किया जिसमें छात्रो नें उत्कृष्ट प्रदर्शन कर गुजरात राज्य के तमाम क्षेत्रों का ज्ञान जनसमूह के समक्ष प्रस्तुत किया।

युवक महोत्सव दौरान डॉ. प्रज्ञा जोषीजी, डॉ. राधेश्यामभाई त्रिवेदीजी एवं प्रा. भोगायताजी की निर्णायकश्रीओं के रूप में विशिष्ट उपस्थिति रही थी॥

इस तरह का युवक महोत्सव एवं शास्त्र प्रतियोगिता का आयोजन महाकुम्भ का सजल-सफल-सरस शास्त्र सम्पोषक अमृतधारा था।

Scanned with CamScanner

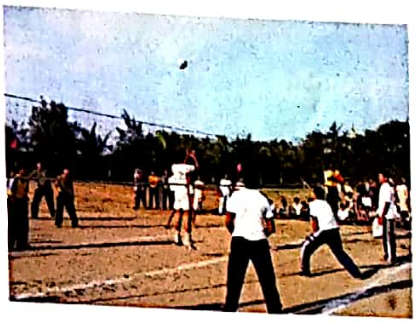

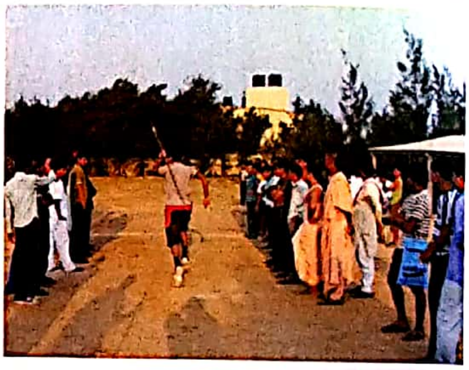

खेलकूद प्रतिस्पर्धाओं का विवरण

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल के द्वारा स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ के अन्तर्गत संस्कृत महाविद्यालयों के विद्यार्थीओं के लिए खेल-कूद स्पर्धाओं का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। इन खेल कूद स्पर्धाओं में विश्वविद्यालय के २७ महाविद्यालय, अनुस्नातक भवन तथा युनिवर्सिटी संचालित संस्कृत कौलेज के विद्यार्थीओं ने भाग ग्रहण किया। खेल कूद प्रतियोगिताओं में वोलीबॉल, गोला फेंक, बरछी फेंक, चक्र फेंक, ऊँची कूद, लंबी कूद, १०० मीटर दौड़ तथा २०० मीटर दौड़ जैसी अनेकविध स्पर्धाओं के माध्यम से छात्रों ने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

इन स्पर्धाओं को दो सत्रों में आयोजित किया गया। जिस में वोलीबॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान श्री दर्शनम् संस्कृत महाविद्यालय-छारोडी ने, द्वितीय स्थान श्री बाबडेश्वर संस्कृत महाविद्यालय-पोरबन्दर ने तथा तृतीय स्थान श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी संचालित संस्कृत कोलेज ने प्राप्त किया।

इसी तरह खेलकूद प्रतियोगिताओं में विश्वविद्यालय की छात्राओंने भी १०० मी. दौड, २०० मी. दौड़, गोला फेंक, चक्रफेंक

Scanned with CamScanner

महोत्सव

स्पर्धा में उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा अपनी प्रतिभा का विशाल जनसमूह के समक्ष प्रदर्शन किया। इन सभी स्पर्धाओं में महाविद्यालयों के छात्रों ने अपनी अपनी क्षमता के अनुरूप प्रदर्शन कर दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम के अन्तिम दिन मंच पर प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थीओं को विश्वविद्यालय के मान. कुलपति श्री तथा मंचासीन महानुभावों के करकमलों से प्रमाणपत्र तथा पारितोषिक प्रदान कर सन्मानित किया गया। इन सभी स्पर्धाओं में भाग लेनेवाले छात्रों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गये। इस तरह इन लोकप्रिय खेलों के माध्यम से विश्वविद्यालय ने छात्रों के अन्दर निहित शक्तियों को बाहर लाने का प्रयास किया।

खेलकूद स्पर्धाओं के आयोजनमें अधिकारी गण तथा प्राध्यापकश्रीओं के अलावा श्री सुज्ञेश चुडासमाजी, डॉ. भावप्रकाशजी, प्रा. पंङ्कजभाई रावलजी, श्री जतिनभाई भट्टजी, श्री अमितभाई सोनीजी, श्री गोपालभाई ठकरारजी, श्री कमलेशभाई पटेलजी, श्री हितेषभाई जानीजी, श्री अनिलभाई जोषीजी, श्री जितेन्द्रभाई परमारजी का तथा युनिवर्सिटी के विद्यार्थीओं का विशिष्ट योगदान रहा

....

Scanned with CamScanner

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी तथा संस्कृतभारती गुजरात प्रांत के संयुक्त तत्वावधान में समग्र गुजरात के शाला कोलेज के एक लाख छात्रों को संस्कृत संभाषण में पारंगत किया गया। स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ के दौरान इन एक लाख छात्रों के प्रतिनिधि के रूप में पधारे लगभग बारह हजार युवक-युवतिओं के लिए विविध सांस्कृतिक स्पर्धाओं का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम के सम्पूर्ण आयोजन का उतरदायित्व संस्कृत भारती के अध्यक्ष श्री गिरीशभाई ठाकरजी तथा महामन्त्रीजी श्री चन्द्रभूषण पाण्डेयजी एवं विश्वविद्यालय के प्राध्यापक श्री ललितभाई पटेलजी, प्रा. श्री भावप्रकाश गांधीजी, डॉ. डाह्याभाई मोकरियाजी, प्रा. पंकजभाई रावलजी, डॉ. शत्रुघ्न पाणिग्रहीजी, डॉ. रमेशचन्द्र शुक्लजी, श्री जतिन भट्टजी, श्री अमित सोनीजी, तथा गोपाल ठकरारजी, श्री हितेषभाई जानीजी संस्कृतभारती के तमाम जिला संयोजकश्रीओं पर था। इस आयोजन में विश्वविद्यालय के कुलसचिवजी डॉ. विष्णुभाई पुरोहितजी, उपकुलसचिवजी श्री दशरथभाई जादवजी तथा मुख्य वित्त अधिकारी श्री ब्रिजेशभाई मेहताजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

महोत्सव के अन्तर्गत विविध संस्कृत स्पर्धाओं का आयोजन हुआ था जिस में संस्कृतानुरागी सब शाला महाशाला महाविद्यालयों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया गा। संस्कृत महाविद्यालयों के छात्र तो होते ही है किन्तु वेरावल प्रान्तीय शाला महाशाला के भी छात्र अपना ज्ञानवृद्धि हेतु भाग ग्रहण करतें है। ''स्पर्धाया वर्धतिज्ञानम्'' स्पर्धा से ज्ञान में वृद्धि होती है जिस में छात्रों ने वक्तृत्व में, निबंध लेखन में, श्लोकगान-स्त्रोतगान में, रंगोली में तथा विविध स्पर्धाओं में उत्साह से छात्रों ने भाग लिया था।

प्रतियोगिताए

संस्कृत कुम्भ के अन्तर्गत सम्भाषणशील छात्रों के लिए विविध स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। विविध मञ्चों पर आयोजित स्पर्धाओं में गुजरात के विविध गांवों से आये हुये संस्कृत सम्भाषणशील छात्रों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। जिसका विवरण इस प्रकार है

'गुर्जर धरे ! विभासि' गीत की प्रस्तुति १५० छात्रों के अभिनय के साथ हुई।

'अवनितलम्' - इस गीत का सामूहिक गान किया गया।

'आराधयेम निज राष्ट्रम्' - गीत की अभिनय के साथ प्रस्तुति कि गई।

संस्कृत रास - गरबा स्पर्धा में ३० दलों ने हिस्सा लिया। जिसमें एक दलमें १२ से १६ छात्र छात्राएं थे। राजस्थानी, पंजाबी नृत्य भी संस्कृत में पेश हुए जिसका सञ्चालन प्रा. प्रफुल्ल पुरोहितजी ने किया।

संस्कृत लघु नाटक स्पर्धा का आयोजन अलग मञ्च पर किया गया था। जिसमें २८ दलों ने भाग लिया। जिसका संचालन प्रा. पंकज रावलजीने किया।

एकपात्रीय अभिनय में १६ छात्रों ने हिस्सा लिया था। जिसका सञ्चालन डॉ. शत्रुघ्न पाणिग्राहीजी ने किया।

संस्कृत संवाद स्पर्धा में ४० संस्थाओने हिस्सा लिया। जिसका सञ्चालन डॉ. डाह्याभाई मोकरीयाजीने किया।

संस्कृत समूहगान स्पर्धा में ३२ दलों ने भाग लिया। जिसका सञ्चालन डॉ. भावप्रकाश गांधीजी ने किया।

प्रत्येक स्पर्धा के विजेताओं को माननीय कुलपतिश्री प्रो. पंकज जानीजी तथा वरिष्ठ विद्वानो ने सम्मानित किया और प्रमाणपत्र, स्मृतिचिह्न और पारितोषिक प्रदान किये।

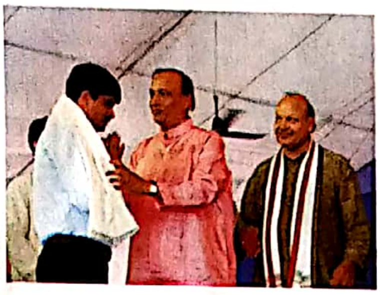

अभिवादन समारोह

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ आयोजन हुआ इस महायज्ञ में बहुत लोगों का पुरुषार्थ - परिश्रम एवं सहकार प्राप्त हुआ जिन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना हमारी संस्कृति है।

अभिवादन उनका होता है जो समाज में स्व को समर्पित कर के परमार्थ के लिये संस्कृति की उन्नति के लिये कुछ करते हैं। श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, वेरावल में जिस महाकुम्भ का आयोजन हुआ उस के मूल में संस्कृत सम्भाषण योजना निहित है। एक लाख छात्रों को, संस्कृत प्रेमी को, संस्कृत भाषी बनाने का काम गुजरात में नहीं अपितु विश्व में प्रथम बार हुआ है। गुजरात सरकार की स्वर्णिम जयन्ती योजना में एक लाख छात्रों को संस्कृत सम्भाषण में निपुण करने का श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी का **स्वर्णिम संकल्प था**। इस संकल्प को चरितार्थ करने में जिन महापुरुषों ने अपना अनुपम योगदान दिया श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटीने उनका एवं संस्कृत - संस्कृति का सन्मान किया, अभिवादन किया।

अभिवादकों में इस योजना में जिन्होंने छात्रों को शिविर के माध्यम से अध्यापन करवाया - इतनी वडी संख्या को संस्कृत सम्भाषण के द्वारा संस्कृत भाषी बनाया उन सब का जिसमें श्री चन्द्रभूषण पांडेजी, प्रा. श्री गिरीशभाई ठाकरजी, प्रा. ललित पटेलजी, प्रा. भावप्रकाश गांधीजी, प्रा. पंकजभाई रावलजी, डॉ. डाह्याभाई

Scanned with CamScanner

समारोह

मोकरियाजी, डॉ.रमेशचन्द्र शुक्लाजी, डॉ. शत्रुघ्न पाणीग्राहीजी, प्रा. प्रफुल्ल पुरोहितजी, श्री पिंकेश सोनीजी, श्री दिपकभाई पारेखजी, श्री भरत व्यासजी, श्री गोपाल उपाध्यायजी, सुश्री दक्षाबेन शुक्लाजी, श्री योगेशभाई भट्टजी, श्री हिमांशु सुतरीयाजी, श्री अतुल उनागरजी, श्री मेहुलभाई भट्टजी, श्री गोविंदभाई पटेलजी, प्रि. श्री त्रिपाठीजी, प्रि. श्री निरौलाजी, प्रि. श्री रामप्रियजी तथा महाकुम्भ में जिन्होंने ब डा योगदान दिया है वैसे श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी स्थित २७ संस्कृत महाविद्यालयों के आचार्यों का अभिवादन किया गया। डॉ. ए. एस. राठौरजी, नियामक श्री मनोजभाई उपाध्यायजी, संयुक्त शिक्षा नियामक श्री डॉ. राजेशभाई पुरोहितजी एवं इस महाकुम्भ के अन्तर्गत जितनी भी स्पर्धायें हुई उन सब स्पर्धा में आये प्रथम - द्वितीय - तृतीय क्रम प्राप्त करने वाले छात्रों का, निर्णायकों का, जिन्होंने वास्तविक रूप से महाकुम्भ में आ कर चार चांद लगाये है वैसे महापुरुषों का जिसमें डॉ. विनोद शर्माजी, डॉ. ताराशङ्कर शास्त्रीजी, श्रीमती डॉ. एस. आर. लीलाजी, डॉ. कलानाथ शास्त्रीजी, डॉ. राजेन्द्र नाणावटीजी, डॉ. गौतमभाई पटेलजी, डॉ. जयप्रकाश नारायण द्विवेदीजी, डॉ. मिश्रजी, तिरुपति से पधारे डॉ. सदाशिव मूर्तिजी का अभिवादन किया गया।

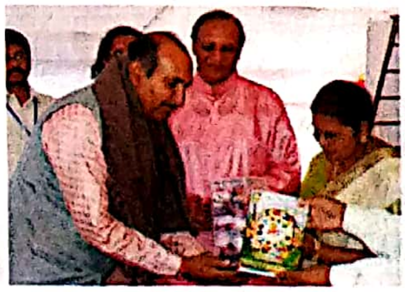

Scanned with CamScanner

पारितोषिक

अन्य विश्वविद्यालयों से पधारे संस्कृत विषय के विद्वान ऐसे प्रो. डॉ. अजीत ठाकोरजी, डॉ. चोटलियाजी, डॉ. काथडजी, डॉ. मणीभाई प्रजापतिजी, डॉ. अंबालाल प्रजापतिजी, प्रो. रमेशचन्द्र चतुर्वेदीजी, करनाल से पधारे डॉ. शर्माजी का माननीय कुलपतिजी ने अभिवादन किया। इन महानुभावों के *आगमन से और अभिवादन स्वीकारने के कारण हम धन्यता का अनुभव करते है। "मानो हि महतां धनं"।*

भास नाट्य प्रस्तुति करने वाले तमाम कलाकारों तथा नाट्य निर्देशकों का अभिवादन किया गया। विशिष्ट प्रस्तुति- सुंदरकाण्ड पाठ के लिए प्रि. श्री नंदकिशोर द्विवेदीजी तथा भजन संध्या प्रस्तुति के लिए सांदिपनि विद्यानिकेतन पोरबंदर के छात्रों एवं अध्यापकों का अभिवादन किया गया।

चिद्विलासिनी नाट्य संस्था के निर्देशिका डॉ. प्रज्ञा अगस्थी तथा तमाम कलाकारों, केरल से पधारे कालरी परशुराम मार्शल आर्ट के कलाकारों का अभिवादन किया गया साथ ही युविवर्सिटी के इस भगीरथ कार्य को पूर्ण करने में जिन अन्य महानुभावों ने योगदान दिया ऐसे डॉ. गीताबेन पण्ड्याजी, डॉ. राजेश भट्टजी, डॉ. विशाल जोषीजी, प्रो. भावेश लाखाणीजी, प्रो. योगेश यादवजी, प्रो. महेश पटेलजी, डॉ. सरवैयाजी, डॉ. मनिष जानीजी, प्रो. मनिषाबहन हैं।

इस महाकुम्भ के सफलता के वास्तव में जो हकदार हैं ऐसे विश्वविद्यालय के आधार स्तम्भ समान श्री गोपाल ठकरार, श्री अमित सोनी, श्री अनिल जोषी, श्री जतिन भट्ट, श्री हितेष जानी, श्री कमलेश पटेल, श्री जितेन्द्र परमार, श्री जगदीशभाई, श्री भीमभाई,

Scanned with CamScanner

वितरण

श्री निकुलभाई, श्री अनिल वाला, श्री नारणभाई, श्री अनिरूद्धभाई का माननीय कुलपतिजीने भूरि- भूरि अभिनन्दन एवं धन्यवाद किया

स्वर्णिमगुजरात संस्कृत सम्भाषण योजना तथा स्वर्णिमगुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ आयोजन में जिन अधिकारीश्रीओं तथा प्राध्यापकश्रीओं का विशिष्ट योगदान रहा उन्हें माननीय कुलपतिजीने अभिवादन समारोह के दौरान सम्मानित किया। ये महानुभाव हैं - कुलसचिवजी डॉ. विष्णु पुरोहितजी, उप-कुलसचिव जी श्री दशरथ जादवजी, मुख्य वित्त अधिकारीजी श्री ब्रिजेश मेहताजी, साहित्य संकाय के अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र कुमार पण्ड्याजी, वेद संकाय के अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्रनाथ पाण्डेयजी का कुलपतिजीने अभिवादन किया।

महाकुम्भ के समापन समारोह में, समग्र संस्कृत सम्भाषण योजना तथा महाकुम्भ आयोजन के लिए माननीय कुलपतिजी ने माननीय मुख्यमन्त्रीजी श्री नरेन्द्र मोदीजी, मान. शिक्षामन्त्रीजी श्री रमणलाल वोराजी, मान. उच्च एवं तकनीकी शिक्षा राज्य मन्त्रीजी प्रो. वसुबेन त्रिवेदीजी, मान. मुख्यमन्त्रीजी के शिक्षा सलाहकार श्री किरीट जोषीजी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन, शिक्षा विभाग के अग्र सचिवजी डॉ. हसमुख अढीयाजी (भा.प्र.से.), उच्च शिक्षा आयुक्तजी श्रीमति जयन्ति रविजी (भा.प्र.से.), नायब सचिवश्री विक्टर मेकवानजी तथा शिक्षा विभाग के अधिकारीश्रीओं के सम्पूर्ण साथ एवं सहकार के लिए अभिवादन किया तथा कृतज्ञता व्यक्त की।

Scanned with CamScanner

संस्कृत संभाषण योजना में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करने वाली संस्थाए

बिनसरकारी ग्रान्टेड संस्कृत पाठशाला

- स्वामि श्रीहिरापुरी संस्कृत विधालय - अहमदाबाद
- श्री सरयुरामानंद संस्कृत पाठशाला - अहमदाबाद
- श्री रामजानकी संस्कृत महाविद्यालय - अहमदाबाद
- श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय- अहमदाबाद
- श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय - डभाण
- श्री ब्रह्मर्षि संस्कृत महाविद्यालय - डाकोर
- श्री अंबिका संस्कृत महाविद्यालय - अंबाजी
- श्री गोपालकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय - सिद्धपुर
- श्री नारायण संस्कृत महाविद्यालय - पेटलाद
- श्री डाकोर संस्कृत पाठशाला - डाकोर
- श्री हैडीयाखंडीसंस्कृतमहाविद्यालय - कायावरोहण
- श्री बाबडेश्वर संस्कृत महाविद्यालय - पोरबंदर
- श्री भारतीय चर्तुधाम वेदभवन विद्यालय - द्वारका
- श्री शंकराचार्य अभि.सच्चि.सं.म. - द्वारका
- श्री नर्मदा संस्कृत महाविद्यालय - झाडेश्वर
- श्री सूर्यपुर संस्कृत पाठशाला - आमलीरान (सूरत)
- श्री श्रीकृष्ण संस्कृत पाठशाला - बेटद्वारका
- संस्कृत पाठशाला - कडीयादरा
- श्री सीताराम गुप्ता संस्कृत महाविद्यालय- राजपुर
- स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय - सुखपर
- याज्ञवल्कय वेद संस्कृत पाठशाला - मुडेटी
- वासुदेव संस्कृत पाठशाला - लांधणज
- आणंदबावा वेदांत पाठशाला - धोरीवाव
- संध्यागीरीबापु संस्कृत वेद विद्यालय - सामखीयाळी

Scanned with CamScanner

संस्कृत संभाषण योजना में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करने वाली संस्थाए

- अनिरूध्धाचार्य संस्कृत पाठशाला - चांदोद
- दर्शनम संस्कृत महाविद्यालय - छारोडी
- श्री जाम्बु ब्राह्मण संस्कृत महाविद्यालय - चांदोद
- महर्षि अरविंद संस्कृत महाविद्यालय - बास्पा

सरकारी संस्कृत पाठशाला

- राजकीय संस्कृत पाठशाला - पेटलाद
- राजकीय संस्कृत पाठशाला - जामनगर.
- राजकीय संस्कृत पाठशाला - जूनागढ
- राजकीय संस्कृत पाठशाला - सिहोर
- श्री राजकीय संस्कृत पाठशाला - पोरबंदर

बिनसरकारी नोन ग्रान्टेड

- श्री निवास संस्कृत महाविद्यालय - खोरासा
- जहानवी संस्कृत पाठशाला - अमरेली
- महर्षि दयानंद सरस्वती स्मारक ट्रस्ट - टंकारा
- महर्षि अरविंद संस्कृत महाविद्यालय - हारीज
- संस्कृत पाठशाला - बोलुन्द्रा
- लक्ष्मीनारायण देव संस्थान संस्कृत महाविद्यालय - वडताल
- श्री सांईनाथ संस्कृत महाविद्यालय - सुरत
- श्रीमती के.बी.जोषी संस्कृत विद्यालय - पोरबंदर
- श्री जागनाथ महादेव गुरूकुल - आणंद
- श्री रामकृष्ण संस्कृत पाठशाला - पालनपुर
- ज्ञान-विज्ञान, संस्कृत पाठशाला - महुवा

Scanned with CamScanner

वेद शास्त्र पारंगत संस्कृत पण्डित सन्मान समारोह
एवं
संस्कृत गौरव पुरस्कार अर्पण समारोह

Scanned with CamScanner

आयोजक

खेलकुद, युवा एवं सांस्कृतिक विभाग अन्तर्गत

संस्कृत साहित्य अकादमी, गुजरात राज्य - गांधीनगर

Scanned with CamScanner

संस्कृतोत्सव

स्वर्णिम जयंती के उपलक्ष में गुजरात राज्य में राज्य के संस्कृति विभाग, संस्कृत अकादमी, श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी तथा संस्कृत भारती - गुजरात प्रांत ने विविधकार्यक्रमों का आयोजन किया। इसके अलावा राज्य के विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में भी संस्कृत भाषा साहित्य के विकास के लिए प्रचुर मात्रा में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

आषाढ के प्रथम दिवस के अवसर पर गुजरात सरकार के क्रीडा, युवा तथा सांस्कृतिक प्रवृत्ति विभाग, संस्कृत - साहित्य अकादमी गांधीनगर तथा संस्कृत भारती - गुजरात के संयुक्त उपक्रम में स्वर्णिम गुजरात संस्कृतोत्सव दिनाङ्क १२/७/२०१० को गांधीनगर के टाउनहोल में आयोजित किया गया।

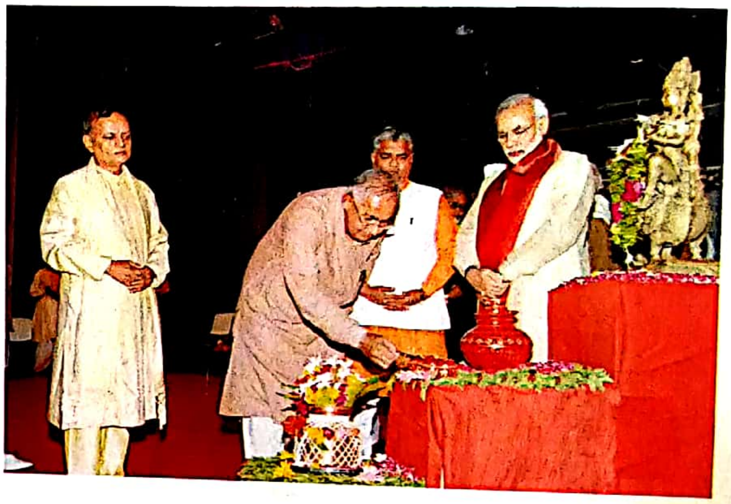

इस कार्यक्रम में १००० से भी ज्यादा संस्कृतज्ञ तथा संस्कृतानुरागी लोग उपस्थित रहे थे। इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि के रूप में गुजरात राज्य के माननीय मुख्यमन्त्रीजी श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी उपस्थित रहे। गुजरात राज्य के माननीय मन्त्रीश्री युवा, क्रीडा तथा सांस्कृतिक प्रवृत्ति विभाग श्रीमान् फकीरभाई वाघेलाजी के सीधे मार्गदर्शन में इस समग्र कार्यक्रम का आयोजन किया गया। माननीय मन्त्रीजी स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण विभाग श्रीमान् परबतभाई पटेलजी इस कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे और कार्यक्रम की शोभावृद्धि की।

गुजरात राज्य के खेल, युवा एवं सांस्कृतिक प्रवृत्ति विभाग के माननीय सचिव श्री भाग्येशभाई ज्हाजी (भा.प्र.से.) ने महानुभावों का शाब्दिक स्वागत किया। उन्होंने समग्र कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा समग्र वर्ष दौरान विभाग द्वारा संस्कृत के जो कार्यक्रम आयोजित किये उसका भी सविस्तार वर्णन किया।

विभाग के माननीय मन्त्रीजी श्रीमान् फकीरभाई वाघेलाजीने अपने प्रवचन में उपस्थित संस्कृत अनुरागी महानुभावों के समक्ष संस्कृत भाषा साहित्य के प्रचार - प्रसार के लिए राज्य सरकार की कटिबद्धता प्रस्तुत की तथा उन्होंने अपने प्रवचन में कहा कि गुजरात राज्य पूरे भारत देश के लिए संस्कृत, संस्कार-संस्कृति के संवर्धन के लिए एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है, हम सब मिलकर हमारी जननी ऐसी संस्कृत भाषा के लिए हर संभव प्रयास कर फिर से प्राचीन गौरव को प्रस्थापित करेंगे।

उन्होंने कहा कि गुजरात राज्य सरकार ने संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की साथ ही संस्कृत पाठशालाओं,

Scanned with CamScanner

महाविद्यालयों एवम् परंपरागत शिक्षण में प्रवृत्त संस्थाओंको भी एक नयी दिशा एवं उत्कृष्टता की तरफ अग्रसर करने की कटीबद्धता दोहराई। उन्होंने वेदशास्त्र पारंगत संस्कृत पंडितों के सम्मान तथा उन्हें गौरव पुरस्कार से पुरस्कृत करने के इस अवसर को ऐतिहासिक एवम् अपने आप के लिए एक गौरवशाली पल की अनुभूति की ऐसी भावना उन्होंने अपने वक्तव्य में प्रकट की।

माननीय मुख्यमन्त्रीजी श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी के करकमलों से वेदशास्त्र पारंगत संस्कृत पंडितों का सम्मान किया गया तथा उन्हें गौरव पुरस्कार अर्पण किया गया। माननीय मुख्यमंत्रीजीने अपने वक्तव्य में कहा कि संस्कृत पण्डितों का सन्मान करना उनके लिए बडे सौभाग्य की बात है, यह सन्मान समग्र गुजरात राज्य का सम्मान है, संस्कृत भाषा का सम्मान है, संस्कृत के पण्डितों को माननीय मुख्यमंत्रीजी ने कोटि कोटि वंदन किया तथा उन्हें शुभकामना एवं अभिनंदन प्रदान किये। उन्होंने मातृभूमि गुर्जर धरा की अस्मिता की बात को सभी संस्कृत अनुरागी महानुभावों के समक्ष रखते हुए कहा कि - हमारी प्रगति, उन्नति, गर्व, गौरव सबकुछ हमारे संस्कार, संस्कृति एवं संस्कृत के कारण ही है, हम आज जो कुछ भी है, जो कुछ भी कर रहे है यह सब संस्कृत एवं संस्कार की बदौलत है। उन्होंने कहा कि जो बच्चा सुसंस्कृत है, संस्कारी है, संस्कृत को पढता है वह दुनिया की हर परीक्षा मे, जीवन की हर परीक्षा में अव्वल रहता है और दूसरों के लिए वह पथप्रदर्शक बनता है।

इस कार्यक्रम के दौरान वेदशास्त्र पारंगत संस्कृत पंडितों का सम्मान तथा जिन्हें गौरव पुरस्कार अर्पण किये गये उन महानुभावों के नाम इस प्रकार है ...

डॉ. इन्द्रवदन त्रिवेदी

श्री नारायणप्रसाद नर्मदाशंकर ओझा

श्री मनसुखलाल दयाशंकर जोशी

श्री फूलशंकर गिरजाशंकर व्यास

श्री अंबाशंकर मणीशंकर जोशी

शास्त्री अमृतलाल तुलसीदास दवे

श्री आनंदप्रसाद पुरुषोत्तमदास जोशी

पण्डित श्रीरणछोडलाल लक्ष्मणदास

श्री घनश्यामभाई करुणाशंकर शुक्ल

श्री डाह्याभाई करुणाशंकर शास्त्री

डॉ. राजेन्द्रभाई नाणांवटी

डॉ. हर्षदेव माधव

Scanned with CamScanner

इस कार्यक्रममें संस्कृत रास - गरबा, अन्य प्रांत के लोकनृत्यों की संस्कृत में प्रस्तुति की गई तथा महाकवि कालिदास कृत 'मेघदूत' का नाट्यमञ्चन प्रस्तुत हुआ। संस्कृत अकादमी के महामात्र श्री हर्षद त्रिवेदीजीने सभी आमंत्रित महानुभावों तथा उपस्थित संस्कृत अनुरागी महानुभावों का अभिवादन किया तथा कार्यक्रम में उपस्थित रहने तथा संस्कृत में रुचि रखने के लिए आभार प्रदर्शित किया के लिए आभार प्रदर्शित किया।

यह सब राज्य सरकार की दृढ इच्छाशक्ति एवं **Vision in action** अर्थात् अपनी दृष्टि को मूर्तरूप देने की सतत् प्रक्रिया के कारण संभव हो पा रहा है - जिसने श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी में अन्त्योदय की संकल्पना के तहत समाज के साधनविहीन एवं अपर्याप्त संसाधन वाले छात्र - छात्राओं को मुफ्त रहने एवं भोजन की व्यवस्था के लिए युनिवर्सिटी को ४७ लाख का अनुदान प्रदान किया है। संस्कृत को समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचा कर मनोवैज्ञानिक रूप से व्यक्ति को स्वाभिमानी, स्वावलम्बी तथा समर्थ बनाकर समाज में समरसता एवं समृद्धि लाने की दृष्टि से गुजरात राज्य का यह सफल प्रयास आज प्रत्यक्ष दिखाई देने लगा है - जो भारत के अन्य राज्यों के लिए एक आदर्श एवं अनुकरणीय वस्तु है। गुजरात राज्य के जनप्रतिनिधियों विशेष रूप से माननीय मुख्यमंत्रीजी ने इस तथ्य को अपनी अन्त: प्रज्ञा के द्वारा यह बखूबी समझा है - कि समाज की आर्थिक विषमता एवं अन्य विषमताओं को मिटाने के लिए किसी वर्ग विशेष को वर्ग विशेष के खिलाफ किसी झंडे तले गोलबन्द करने के

माध्यम की अपेक्षा परस्पर समभाव, एकदूसरे के प्रति समादर एवं सहानुभूति की भावना को जागृत कर ही दूर किया जा सकता है - जिसकी क्षमता मात्र संस्कृत - भाषा एवं इसके विपुल साहित्य में ही है। वैदिक साहित्य का यह वाक्य की "केवलाद्यो भवति केवलादी" अर्थात् अपने लिए अन्न पकाकर खाने वाला व्यक्ति पापी होता है - अर्थात् उसे मिलबाँट कर खाना चाहिए - इसी सिद्धान्त की ओर संकेत करता है।

अत: समाज के कमजोर वर्ग के छात्र - छात्राओं को संस्कृत का अध्ययन एवं इसमें शोधकरने के लिए राज्य सरकार ने छात्र-वृत्ति की पर्याप्त व्यवस्था की है - जिसके चलते वे छात्र आज संस्कृत के क्षेत्र में आगे बढते दिखाई देते है। इस प्रकार गुजरात राज्य सरकार संस्कृत के उत्थान के लिए अतिशय प्रयत्न कर रही है - जिसके तहत संस्कृत पाठशालाओं एवं महाविद्यालयों के अध्यापकों के वेतन क्रम को सम्माननीय स्थिति में लाकर उन्हें आगे बढने का अवसर प्रदान किया है। अत: गुजरात राज्य आज संस्कृत भाषा एवं साहित्य की निधिमें भारत के विकास के सूत्र को देखते हुए

Scanned with CamScanner

गुजरात को एक विकसित राज्य बनाकर आज सिद्ध करना चाहता है कि भारतीय समाज में सुख - शान्ति एवं समृद्धि हमारे अपने ऋषि - मुनियों एवं संस्कृत के आचार्यो के दर्शाए मार्गों पर चलने से ही निर्भर है।

इस दिशा में गुजरात का सम्पूर्ण समाज अपना योगदान कर रहा है - जिसका परिणाम स्वर्णिम गुजरात की संस्कृत कुंभ की सफल योजना हमारे सामने प्रस्तुत है । गुजरात में संस्कृत के प्रचार प्रसार हेतु प्रतिवर्ष विविधसंस्थाओं, विश्वविद्यालयों एवं समितियों के द्वारा विविधकार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं, इनमें संस्कृत साहित्य अकादमी भी कार्यक्रम एवं परिसंवादों के आयोजन हेतु संयुक्त रूप से आर्थिक अनुदान प्रदान कर गुजरात में विविधस्थलों पर कार्यक्रमों का आयोजन करती है । वर्ष २०१० - २०११ में संस्कृत साहित्य अकादमी ने अनेकविधकार्यक्रमों का आयोजन किया । जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

द्विदिवसीय परिसंवाद - आंकलाव

श्री एस. डी. पटेल आर्ट्स एण्ड सी. एम. पटेल कोमर्स कोलेज, आंकलाव तथा संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधीनगर के संयुक्त उपक्रम में दिनांक ११-१२ जनवरी २०१० पर द्विदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। इस परिसंवाद का विषय था - "महाकाव्य की परम्परा का विस्तार - महाभारत प्रभाव "। इस कार्यक्रम में संस्कृत के विद्वानो ने उपस्थित रह कर उपरोक्त विषय के अन्तर्गत अपने संशोधन पत्र प्रस्तुत किये। इस कार्यक्रम में श्री एस. पी. युनिवर्सिटी के संस्कृत - अनुस्नातक विभागाध्यक्ष डॉ. अजितभाई ठाकोरजी, कोलेज के आचार्यजी तथा साहित्य अकादमी के अधिकारी उपस्थित रहे । विभिन्न कालेज से आये हुये अध्यापकों ने इस परिसंवाद में भाग लिया।

द्विदिवसीय परिसंवाद - कपडवंज

शाह के. एस. आर्ट्स एण्ड वी. एम. पारेख कोमर्स कोलेज कपडवंज तथा संस्कृत साहित्य अकादमी - गांधीनगर के संयुक्त उपक्रम में दिनांक ५/६ फरवरी २०११ पर द्विदिवसीय परिसंवाद का आयोजन कपडवंज में किया गया । इस परिसंवाद का विषय था - "कालिदास का साहित्य सांप्रत समस्याओं का समाधान" । विविधकोलेज से आये हुये संस्कृत के अध्यापकों ने अपने संशोधन पत्र विषय के परिप्रेक्ष्यमें पेश किये।

द्विदिवसीय परिसंवाद - महेसाणा

श्री आनर्त संस्कृत - संस्कृति स्वाध्याय संस्थान, महेसाणा तथा संस्कृत साहित्य अकादमी, गांधीनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाङ्क ५/६ मार्च, २०११ पर आर्ट्स एण्ड कोमर्स कोलेज, नागलपुर - महेसाणा में "संस्कृत साहित्य तथा शास्त्रो में पर्यावरण चिंतन" विषय पर द्विदिवसीय परिसंवाद का आयोजन बडी सफलता के साथ

Scanned with CamScanner

सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में गणपत युनिवर्सिटी के पूर्व कुलपतिश्री पी. आई. पटेलजी, श्रीहर्षदेव माधवजी, श्रीगिरीशभाई ठाकरजी, श्रीमणीभाई प्रजापतिजी, कोलेज के आचार्यश्री उपस्थित रहे। संस्कृत के विद्वान् अध्यापकों ने प्रस्तुत विषय पर संशोधनपत्र प्रस्तुत किये। पर्यावरण की अनेक समस्यायें तथा उन समस्याओं का समाधान उन्होंने अपने संशोधनपत्रों के द्वारा प्रस्तुत किया।

एकदिवसीय परिसंवाद - हिंमतनगर

सर्वप्रथम दिनांक - ४/१२/२०१० को एस. एस. महेता आर्ट्स एन्ड एम. एम. पटेल कोमर्स कोलेज, हिंमतनगर में 'संस्कृत साहित्य में सुभाषित एवं सूक्तियां' इस विषय पर एकदिवसीय परिसंवाद आयोजित किया गया। इस राज्यस्तरीय परिसंवाद में संस्कृत साहित्य में विद्यमान नीतिविषयक सुभाषितों के माध्यम से किस प्रकार हम श्रेष्ठ समाज का निर्माण कर सकते हैं ? इस विषय पर गुजरात के सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों ने तथा अध्यापकों ने अपने शोधपत्र के माध्यम से विचार व्यक्त किये। इस परिसंवाद में डॉ. हर्षदेव माधव, डॉ. डी. जी. वेदिया, डॉ. जयदेव जानी, डॉ. डी. वी. राठवा, डॉ. निरंजन पटेल जैसे विषय विशेषज्ञों ने साम्प्रत समय में सुभाषितों की उपयोगिता के बारे में अपने सारगर्भित एवं सुरुचिपूर्ण व्याख्यानों से श्रोताओं को अवगत कराया।

एक दिवसीय परिसंवाद - इडर

इसी कडी में संस्कृत साहित्य अकादमी के सहयोग से इडर आंजणा कोलेज, इडर में दिनांक ४/१/११ के दिन 'राम एवं श्रीकृष्ण का जीवन सन्देश' इस विषय पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। भारतीय संस्कृति के दो आदर्श महापुरुषों के जीवन जीने के लिए जो उपदेश प्रदान किये गये हैं, इस चर्चा को मुख्यरूप से जनता के समक्ष रखा गया। रामायण - महाभारत एवं पुराणों में राम एवं कृष्ण के जो जीवन सिद्धान्त प्राप्त होते हैं इस विषय पर संस्कृत के विद्वानों ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। इस परिसंवाद में स्थानीय संस्कृत अध्यापकों के अतिरिक्त डॉ. नरेन्द्र एल. पण्ड्या, डॉ. योगिनी व्यास, डॉ. डी. जी. वेदिया जैसे विषय विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किये।

द्विदिवसीय कार्यशाला - अहमदाबाद

संस्कृत विभाग, भाषा साहित्य भवन गुजरात युनिवर्सिटी तथा संस्कृत साहित्य अकादमी - गांधीनगर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'वेद - रक्षा उपाय' इस विषय पर १२-१३/११/२०१० को द्विदिवसीय कार्यशाला का आयोजन

किया गया। इस कार्यशाला में गुजरात राज्य तथा सम्पूर्ण देश के वैदिक विद्वान् तथा वेदपाठी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में चारों वेदों की विशिष्ट उच्चारण पद्धति का अष्टविकृतियों के पाठ के साथ अनेक वेदपाठियों ने प्रदर्शन किया। सम्पूर्ण देश में उच्चारण-भिन्नता के कारणों पर भी वैदिक विद्वानों के मध्य में सार्थक चर्चा हुई तथा वेदों का संरक्षण आधुनिक समय में कैसे किया जा सकता है ? इस पहलू पर विचारमंथन किया गया। इस कार्यशाला में बरेली से पधारे स्वामी गोपालानन्द सरस्वती एवं एटा से पधारे डॉ. सत्यानन्द वेदवागीशजी का मार्गदर्शन मुख्य आकर्षण रहे।

द्विदिवसीय परिसंवाद - अहमदाबाद

इसी श्रृंखला में संस्कृत साहित्य अकादमी के संयुक्त उपक्रम में 'संस्कृत भाषा सरला सुमधुरा च' विषय पर सामाजिक विकास केन्द्र - अहमदाबाद ने ३० एवं ३१ जनवरी २०११ को द्विदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया। संस्कृत भाषा का भारतीय सभ्यता के साथ अटूट संबंध है, संस्कृत के ह्रास के साथ हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का भी ह्रास दिखाई दे रहा है। आधुनिक मानव के आचार-विचार-व्यवहार-ज्ञान-आहार-वेशभूषा में सभी में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव नजर आ रहा है। इस विकट समय में संस्कृत ही एक ऐसा माध्यम है जिससे हम अपने खोए हुए वैभव को प्राप्त कर सकते हैं। इस विषय को केन्द्र में रखते हुए विचारमंथन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में महामंडलेश्वर स्वामी श्री विश्वदेवानन्दजी तथा जगद्गुरु रामनन्दाचार्य स्वामी श्री रामाचार्यजी उपस्थित थे।

चार सत्रों में विभाजित इस परिसंवाद में श्री क्षमापति मिश्र ने संस्कृत भाषा की आवश्यकता पर, पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र ने मानवचरित्र निर्माण पर अपने विचार व्यक्त किये। अन्य विद्वानों में डॉ. राजेन्द्रप्रसाद शुक्ल, डॉ. वाचस्पति मिश्र एवं श्रीनन्दकिशोर द्विवेदी उपस्थित थे, जिन्होंने संस्कृत का लोकभाषा बनाने के विभिन्न उपायों पर विमर्श किया। इस परिसंवाद का अध्यक्षीय उद्‌बोधन पं. रामकिशोर त्रिपाठीजी ने दिया। सभीने वर्तमान समय में संस्कृत भाषा के अभ्युदय हेतु कटिबद्धता प्रदर्शित करते हुए इस भाषा को लोकभाषा बनाने पर जोर दिया।

ईडर का राज्यकक्षा का परिसंवाद

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता संस्कृत साहित्य का एक अद्वितीय भण्डार है। इन में से मनुष्य जीवन जीने का तरीका सीख सकता है। इस लिए गुजरात राज्य संस्कृत साहित्य

Scanned with CamScanner

अकादमी-गांधीनगर और ईडर आंजणा पाटीदार एच. के. एम. आर्टस एन्ड पी.एन. पटेल कोमर्स कोलेज, ईडर के संयुक्त उपक्रम में राज्यकक्षा का एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन दि.५/३/२०११ को किया गया था । श्रीमद्भागवद्गीता में से युवकों को प्रेरणा इस विषय पर परिसंवाद का मुख्य लक्ष्य हमारे युवाधन को भगवद्गीता में दर्शाये हुए तथ्यों को समझा कर, प्रेरणा देकर अर्जनवत् समाज के द्वन्द्वो से परे होने का और अपनी शक्ति को सच्ची दिशा में जाने देने का था । कुल चार सत्रों में विभाजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र अध्यक्षश्री, श्रीकुमुदचन्द्र रावलजी प्रमुखश्री उ.सा.उ.केळवणी मण्डल, ईडर थे । उद्घाटक श्री प्रा. डॉ. विश्वनाथ शास्त्रीजी (निवृत्त प्राचार्य, आट्र्स एन्ड कोमर्स कोलेज, राधनपुर) एवं अतिथि विशेष डॉ. राकेशभाई शाह थे ।

प्रथम सत्र के अध्यक्ष और प्रमुख वक्ता श्री परमानंदभाई गांधी ने ज्ञानमार्ग के उपाय विषय पर एवं प्रो. टी. एम. पटेल ने गीता में गुरु और शिष्य का संबंध विषय पर अपना वक्तव्य दिया था । द्वितीय सत्र में श्री सुधीर गीरधारी लाल श्रोफ ने जीवन में भक्ति का महत्त्व एवं डॉ. ए.पी. महेता ने विद्यार्थी जीवन में दैवी संपत्ति के गुणों के विषय पर अपना वक्तव्य दिया था । तृतीय सत्र में डॉ.गीताबेन महेता ने आत्मसंयम और युवा विषय पर अपना माननीय प्रवचन दिया था तो डॉ. प्रज्ञाबेन जोषी ने युवाओं को गीता में से प्रेरणा विषयक् अपना प्रेरक प्रवचन दिया था । चतुर्थ सत्र में प्रो. एच. एम. देसाई ने विद्यार्थी और कर्मयोग विषय पर वक्तव्य दिया था । इस परिसंवाद में अन्य स्थान से आये हुए अध्यापकों ने भी इस परिसंवाद रूप यज्ञ में अपने-अपने विचार प्रस्तुत करके आहुती दी थी । राज्य कक्षा की गीता ज्ञान वक्तृत्व स्पर्धा में प्रथम क्रमांक आये हुए दो छात्रों ने भी अपना वक्तव्य दे कर सबको मन्त्रमुग्ध कर दिया था । समापन सत्र के अध्यक्ष प्रा. एन. एन. शाहजी थे ।

आर. एच. पटेल आट्र्स एन्ड कोमर्स कोलेज - अहमदाबाद

'गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः' उक्ति अनुसार मनुष्य जीवन में भगवद्गीता के विचारों का स्थान अनन्य है । इस लिए ही संस्कृत साहित्य अकादमी और आर. एच. पटेल आट्र्स एन्ड कोमर्स कोलेज, अहमदाबाद के

Scanned with CamScanner

संयुक्त उपक्रम में दिनांक २६/०२/२०११ के दिन श्रीमद्भगवद्गीता आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विषय पर एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया था।

इस परिसंवाद के उद्घाटक उत्तर गुजरात युनिवर्सिटी के भूतपूर्व कुलपति आदरणीय श्री कुलीनचन्द्र याज्ञिकजी थे। उन्होंने इस परिसंवाद की सार्थकता और भगवद्गीता के महत्व के बारे में अपना मन्तव्य प्रस्तुत किया था। इस सत्र में युवक कल्याण और संस्कृति विभाग के माननीय सचिव श्रीभाग्येश ज्हाजी (भा.प्र.से.), गुजरात संस्कृत साहित्य अकादमी के महामात्र श्री धवल महेताजी और श्री हर्षद त्रिवेदीजी भी उपस्थित रहे थे। डॉ. शान्तिकुमार पंड्याजी ने श्रीमद्भगवद्गीता और मेनेजमेन्ट की विभावना विषय पर अपना संशोधन प्रस्तुत किया था तो डॉ. नवीनभाई पटेल ने श्रीमद्भगवद्गीता और मनोविज्ञान विषय पर अपने विचार प्रकट किये थे। श्री एन. वी. सूचक जी और श्री जय वसावडाजी ने भी श्रीमद्भगवद्गीता और मेनेजमेन्ट विषय पर अपने अपने प्रेरक प्रवचन दिये थे।

संस्कृतभारती गुजरात

संस्कृतभारती एक जन आंदोलन चला रही है कि संस्कृत भाषा फिर से जनभाषा हो और पुनः भारत जगद्गुरु के स्थान पर बिराजे। इस जन आंदोलन के माध्यम से लाखों लोगोनें संस्कृत सम्भाषण सीखा है और आगे सीखा रहें हैं। संस्कृतभारती इसके अलावा संस्कृत शिक्षकों का प्रशिक्षण, व्याकरण वर्ग, गीताशिक्षण केन्द्र, पत्राचार द्वारा संस्कृत, शिक्षक प्रशिक्षक वर्ग, संस्कृत सम्भाषण शिबिर, आवासीय संस्कृत सम्भाषण शिबिर, संस्कृत गृहम्, पुस्तक प्रकाशन और बालकेन्द्र जैसे कार्यक्रम करती है।

१८ जनपदोमें संस्कृतभारती का कार्य है। २३ कार्यस्थली है। ६५ संपर्क स्थान हैं। इस वर्ष ५६ नये प्रशिक्षक बने कुल २५६ शिबिर चालकों की संख्या गुजरात में है।

शिक्षकप्रशिक्षणवर्ग

संस्कृतभारती सम्भाषण शिबिर चलाने के लिऐ प्रति वर्ष शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन करती है। इस वर्ष एक नये रुप में शिक्षक प्रशिक्षण वर्ग का आयोजन किया गया। कच्छ जिले के बिदडा गांव को इस नये आयाम के लिए चुना गया। पूरे गुजरात के चयन किए गये प्रशिक्षको ने सम्भाषण शिबिर संचालन का प्रशिक्षण लिया और उसे बिदडा

Scanned with CamScanner

गांव के लोगों के सहयोग से गांव में अलग-अलग स्थानो पर सम्भाषण शिबिर का आयोजन किया और गांवके लोगो को संस्कृत सम्भाषण का आस्वाद कराया। सभी शिक्षार्थीओने सभी संस्कृतप्रेमीओ को सम्भाषण का प्रशिक्षण दिया। भुज के संस्कृतभारती के कार्यकर्ताओनें पूरे वर्ष महीने में दो बार इस ग्राममें विशेष सम्भाषण के प्रशिक्षण की व्यवस्था की। इस प्रशिक्षण वर्गमें ५६ शिक्षार्थीओनें उत्साह और उमंग से भाग लिया।

संस्कृत लोकगीत-लोकनृत्यों की रचना

संस्कृत भारती - गुजरात प्रांत के अध्यक्षजी श्री गिरीशभाई ठाकरजी एवं मंत्रीजी श्री चन्द्रभूषण शास्त्रीजी के मार्गदर्शन में तथा गुजरात संस्कृत अकादमी के सहयोग से संस्कृत भाषा में विविध लोकगीत एवं लोकनृत्यों की रचना की गई जिसमें गुजराती गरबा तथा रास, राजस्थानी लोकनृत्य, पंजाबी भांगडा मुख्य है। इस कार्य में संस्कृति विभाग के सचिवजी श्री भाग्येशभाई झाजी (भा.प्र.से.) तथा महामात्र श्री हर्षदभाई त्रिवेदीजी का योगदान महत्त्वपूर्ण है। खुद श्री भाग्येशभाई झाजी ने भी संस्कृत गीतों की रचना की है जो अपने आप में एक मिसाल है। संस्कृतोत्सव के दौरान शाला एवं महाशालाओं के छात्रों ने इन गीतों का प्रभावशाली ढंग से मंचन किया था।

शिबिर संचालकों का प्रशिक्षण वर्ग

स्वर्णिम गुजरात वर्ष के अनुसंधान में संस्कृतभारती और श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के द्वारा १,००,००० छात्रो को सम्भाषण सिखाने के लिऐं पूरे गुजरात राज्य में लगभग २००० लोगों को प्रशिक्षण दिया। कलोल, अमदावाद, सिद्धपुर, पेटलाद, जूनागढ, वांकानेर, सूरत संस्कृतभारती के

कार्याकर्ताओं के द्वारा सभी शिबिरो में प्रशिक्षण दिया।

संस्कृतगौरव परीक्षा

इस वर्ष संस्कृत गौरव परीक्षा कें माध्यम से विद्यार्थियों को संस्कृत में रुचि जाग्रत करने के लिए इस प्रकल्प के माध्यम से समाज में जागरण का कार्य संस्कृतभारती कर रही है। संस्कृतगौरव परीक्षा विद्यालयों, महाविद्यालय, समाजिक, धार्मिक संस्था के द्वारा ली जाती है। प्रवेशिका, प्रदीपिका, प्रमोदिका , प्रवाहिका चार परीक्षा का आयोजन होता है। पिछले छः वर्ष से संस्कृतभारती के द्वारा संस्कृतगौरव परीक्षा के द्वारा लगभग ६०,००० विद्यार्थीयों ने परीक्षा के माध्यम से देवभाषा संस्कृत का आचमन किया है। ३२० से अधिक परीक्षा केन्द्र हैं। इस वर्ष १४,००० छात्रो नें परीक्षा लिखी है।

विश्व संस्कृत पुस्तकमेला

संस्कृतभारती,गुजरात एवं श्री सोमनाथसंस्कृत विश्वविद्यालय के द्वारा विश्वसंस्कृतपुस्तक मेलेमें १६३ कार्यकर्ताओनें भाग लिया। ३ दिन अलग-अलग कार्यक्रमोमें भी भाग लिया। गुजरात के गरबा, रंगोली

Scanned with CamScanner

इत्यादि सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रदर्शन हुआ। गुजरात की प्रसिद्ध खाने के वस्तुओं का विक्रय केन्द्र भी किया गया था। जहाँ पर गुजरात के खाखरा, गोधरा के लसूण के गांठिया, वडोदरा को लीलो चेवडो, भावनगरके सुप्रसिद्ध गांठिया, एवं वढवाण की मीरची का आचार का संस्कृतभारती के कार्यकर्ताओ के द्वारा विक्री की गई। गुजरात की ओर से लगभग १० नये पुस्तक का विमोचन भी हुआ। संस्कृतभारती, संस्कृत एकेडमी, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के पुस्तक विक्री का केन्द्र भी था। पुस्तक मेले के दरम्यान केवल गुजरात के संस्कृत पुस्तकों की २५,००० रु. की विक्री हुई थी। संस्कृतभारती,गुजरात के सभी प्रमुख कार्यकर्ता गुजरात साहित्य परीषदके पूर्व प्रमुख डॉ. गौत्तमभाई पटेल, सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पंकज जानी महोदय विशेष उपस्थित रहकर कार्यकर्ताओं कों प्रोत्साहित किया।

संस्कृत सम्भाषण शिबिर

संस्कृतभारती के कार्यकर्ताओ ने इस वर्ष समाज, महाविद्यालयो में संस्कृतसम्भाषणशिबिर का आयोजन किया था। पूरे सालमें २५ सम्भाषण शिबर चालाई और ७५० से अधिक लोगो ने भाग लिया।

पत्राचार द्वारा संस्कृत

रोज ब रोजकी व्यस्त दिनचर्या में भी आप संस्कृतभाषा का अभ्यास कर सकते हो। दिने फकत २०मी निकाले और संस्कृतभाषा सीख सकते हैं। इस में प्रवेश, परिचय, शिक्षा और कोविद् एवं चार अभ्यास क्रम हैं। इस वर्ष ३०० लोगोनें पत्राचार के माध्यम से संस्कृत सीखने के लिये पंजीकरण किया है।

गीता प्रशिक्षण केन्द्र

गीताके माध्यम से लोगों को संस्कृत सिखाने कार्यक्रम संस्कृतभारती ने तय किया है। गुजरात में १० केन्द्रों पर पाठन चल रहा है। कुल १५० लोगोनें इस ३ मासके कोर्ष में भाग लिया है।

प्रकाशन

संस्कृतभारती सम्भाषण और संस्कृत भाषा सिखने के लिए १५० से अधिक पुस्तके संस्कृतभारतीनें प्रकाशित किया है जिनमें विज्ञान, नवलिका, व्याकरणम् , साहित्य, पाठ्यउपकरण, सायन्स इन संस्कृत प्रदर्शनी, गीता शिक्षण केन्द्र की पुस्तके हैं। भाषा शिक्षण डीवीडी. गीतों की केसेट, सी.डी., गरबा सी.डी., १५०० व्यवहारिक वाक्य के लिये व्यवहारसाहस्त्री सभी प्रकाशित पुस्तकें आपको संस्कृतभारती, गुजरात प्रान्त कार्यालय सें आपको उपलब्धहो सकती है।

Scanned with CamScanner

स्वर्णिम गुजरात राष्ट्रिय संस्कृत महाकुम्भ

स्मरणिका

मार्गदर्शन एवं प्रेरणा

डॉ. पंकज एल. जानी
मान. कुलपतिजी

डॉ. विष्णु पुरोहित
कुलसचिव

डॉ. दशरथ जादव
उपकुलसचिव

श्री ब्रिजेश महेता
मुख्य वित्त अधिकारी

संकलन

डॉ. देवेन्द्रनाथ पाण्डेय
डीन, वेद वेदांग संकाय

डॉ. नरेन्द्र एल. पण्डया
डीन, साहित्य संकाय

डॉ. पंकज एस. रावल
डीन, प्राच्यार्वाचीन ज्ञान-विज्ञान संकाय

डॉ. भावप्रकाश गांधी
व्याख्याता

डॉ. डाह्याभाई मोकरीया
व्याख्याता

डॉ. ललित पटेल
व्याख्याता

डॉ. शत्रुघ्न पाणिग्रही
व्याख्याता

डॉ. रमेशचन्द्र शुक्ला
व्याख्याता

संकलन सहाय

श्री जतीन भट्ट

श्री कमलेश पटेल

श्री गोपाल ठकरार

श्री हितेष जानी

श्री अनिल जोषी

श्री अमीत सोनी

श्री पीनल ठकरार

श्री कनैया ठाकर

संपर्क सूत्र

श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी
युनिवर्सिटी रोड, वेरावल - ३६२ २६५. जिला - जूनागढ, गुजरात
दूरभाष : ०२८७६ - २४४ ५३२, २४४ ५३३, २४४ ५२८
फेक्स : ०२८७६ - २४४ ४१७
ई-मेईल : infosssu@gmail.com
वेबसाईट : www.shreesomnathsanskrituniversity.org

Scanned with CamScanner

नाट्य प्रस्तुति

Scanned with CamScanner

H.K. 02876 246619

Scanned with CamScanner